वर्ष 24 । अंक 6 । जनवरी, 2023
ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

क्या आप जानते हो ?

महात्मा गांधी डायरी लेखन को बहुत महत्त्व देते थे। वे स्वयं डायरी लिखते थे और उनके आश्रम में रहने वाले लोगों के लिए भी डायरी लिखना आवश्यक होता था। वे मानते थे कि डायरी व्यक्ति का आईना होती है जिसमें वह अपनी सही–सही तस्वीर देख सकता है। गांधीजी के निजी सचिव महादेवभाई देसाई भी प्रतिदिन डायरी लिखते थे। उनकी डायरियों में लिखे महात्मा गाँधी के दुर्लभ संस्मरण हमारी अमूल्य निधि है।

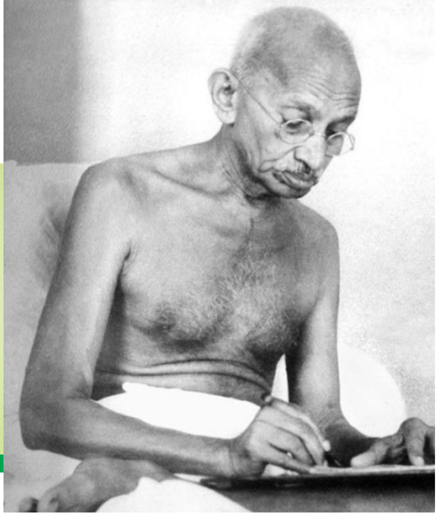

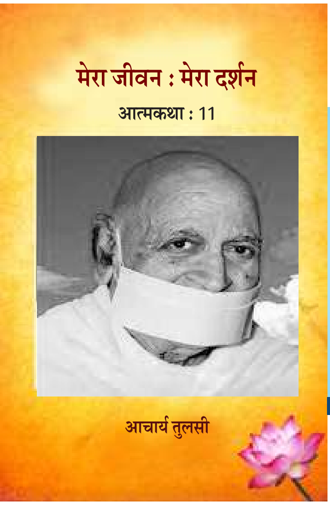

अणुव्रत आंदोलन की शुरूआत करने वाले महान संत आचार्य तुलसी की डायरियों में उनके जीवन का सम्पूर्ण दर्शन संगृहीत है। "मेरा जीवन : मेरा दर्शन" के नाम से प्रकाशित आचार्य तुलसी की आत्मकथा में उनके जीवन के महत्त्वपूर्ण घटनाक्रम हमारे लिए उपलब्ध हैं। 25 पुस्तकों में प्रकाशित यह आत्मकथा आचार्य तुलसी की डायरियों से ही पूर्णता को प्राप्त हो सकी।

लगभग 2000 वर्ष पूर्व रोम के एक वकील प्रतिदिन डायरी लिखा करते थे। उनका नाम था प्लिनी। रोमन साम्राज्य की घटनाओं का उसमें वर्णन मिलता है। इस डायरी में उस ज्वालामुखी के फटने का भी विवरण है जिसमें पोम्पेइ नामक शहर नष्ट हो गया था। उस शहर का खंडहर आज भी मौजूद है। 15 वीं सदी के महान व्यक्ति लियोनार्डो द विन्सी भी अपने विचारों और खोजों के बारे में रोज डायरी लिखा करते थे। उनकी डायरियों के 7000 पृष्ठ आज भी सुरक्षित हैं।

डायरी लिखने वाले महान व्यक्तियों का मानना है कि इससे उनके विचारों में स्पष्टता आती है और जीवन में आने वाली कठिनाइयों का वे बेहतर तरीके से सामना कर सकते हैं। जीवन का लक्ष्य निर्धारण करने और लक्ष्य की दिशा में निरंतर चलते रहने में भी डायरी लेखन सहायता करता है।

कहाँ क्या?

आलेख

महाश्वेता देवी	: अलका प्रमोद	– 11
पत्र लेखन	: नेहा गुप्ता	– 22
राष्ट्रीय बालिका दिवस	: कीर्ति श्रीवास्तव	– 26
सिनेस्थेसिया	: मोनिका जैन 'पंछी'	– 28
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	– 34
विश्वकप फुटबॉल – 2022	: अनिल जायसवाल	– 38
पनडुब्बी चिड़िया	: शिवचरण चौहान	– 49

कहानी

लीना की सहेली	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
झूठी शान	: दिनेश विजयवर्गीय	– 09
नानी की नसीहत	: हरिन्दर सिंह गोगना	– 15
झूठ का ऑपरेशन	: समीर गांगुली	– 19
पानी की गोलियाँ	: रेनू सैनी	– 23
पापा! तुम कितने अच्छे हो	: राजेश अरोड़ा	– 31
स्वार्थी लोमड़ी	: माणक तुलसी राम गौड़	– 35
समस्या का समाधान	: डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी	– 37
नन्दू की सलाह	: प्रदीप कुमार शर्मा	– 39
ऐसी जीत कायरता है	: सावित्री चौधरी	– 47

कविता-गीत

युग बदल गया	: अंजीव अंजुम	– 06
गुगगुन गाए मैना	: वसीम अहमद नगरामी	– 10
नव वर्ष आया है	: कुसुम अग्रवाल	– 10
सूरज डूबा आसमान में	: शैलेन्द्र सरस्वती	– 10
रामा स्वामी परमेश्वरन	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
बनो उपकारी	: पवन पहाड़िया	– 18
माँ, किसने मोती बिखराए	: श्याम पलट पांडेय	– 18
पेड़ लगाएँ	: डॉ. भैरूँ लाल गर्ग	– 18
थर–थर काँप रहा हूँ	: डॉ.सतीश चन्द्र भगत	– 30
लोरी	: डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'	– 48
बच्चों का देश	: उदय मेघवाल 'उदय'	– 48

विविधा

विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	– 14
दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	– 16
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	– 17
चित्र पहेली	: चाँद मोहम्मद घोसी	– 25
बूझो तो जानें	: दीनदयाल शर्मा	– 25
साही	: डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव	– 40

स्तम्भ

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार– 44, बाल कलम, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 50, बच्चों का क्लब – 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 6 जनवरी, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

अध्यक्ष | अविनाश नाहर
महामन्त्री | भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया
प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा
सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	30 रु.
वार्षिक	300 रु.
त्रैवार्षिक	800 रु.
पंचवार्षिक	1200 रु.
दस वर्ष	2400 रु.
पंद्रह वर्ष	7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY https://rzp.io/l/uGTBPsrRx
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

रविवार का दिन था। यह रविवार ख़ास था क्योंकि नए वर्ष का यह पहला दिन भी था। इस रविवार को और भी खास बनाने के लिए तन्मय ने अपने खास दोस्तों को अपने घर खाने पर बुलाया था। सर्दी में धूप बड़ी सुहानी लगती है। घर के बाहर चौक में धमाचौकड़ी और मस्ती के बाद जब बच्चे थक गए तो कमरे में आकर सुस्ताने लगे। तन्मय की मम्मी ने बच्चों के मनपसंद पकवान तैयार किए थे जिनकी खुशबू से पूरा घर महक रहा था।

बच्चों का मन टटोलते हुए तन्मय के पापा बोले– चलो बच्चो, गोले में बैठते हैं और कुछ बातें करते हैं। सभी बच्चे एक साथ चहक उठे– ''अंकल, पहले खाना। भूख लग रही है अंकल। देखो ना, मुँह में पानी आ रहा है।'' पापा ने तुरन्त बच्चों की बात मान ली और बोले– ठीक है भई! पहले पेट पूजा, फिर काम दूजा।

बच्चों ने खाने का पूरा आनन्द लिया। कुछ तो पेट भरने के बाद भी अँगुलियाँ चाट रहे थे। कुछ बच्चे तन्मय की मम्मी की तारीफ कर रहे थे और उन्हें थैंक्स बोल रहे थे। कुछ ही देर में सब बच्चे एक गोला बना कर बैठ गए और तन्मय के पापा भी घेरे में बैठ गए। पापा ने आवाज देकर तन्मय की मम्मी को भी बुलाया और अपने पास बैठा लिया। पापा ने सब बच्चों से एक-एक कर के पूछा कि नए वर्ष के लिए उनके मन में क्या सपना है? क्या कोई संकल्प उन्होंने लिया है?

कुछ बच्चों ने रोज दो घंटा पढ़ने, कुछ ने एक घंटा से ज्यादा मोबाइल पर ना बिताने, किसी ने मम्मी पर गुस्सा न करने और किसी ने जन्मदिन पर पौधा लगाने की बात कही। तन्मय ने जब बताया कि उसने हर रविवार डायरी लिखने का संकल्प लिया है तो सब बच्चे उसका मुँह देखने लगे। मम्मी-पापा भी तन्मय को कुछ देर एकटक देखते रहे। बेटे के प्रति उमड़े प्यार से उनकी आँखें गीली हो गई क्योंकि उन्हें भी तन्मय के इस संकल्प का पता नहीं था।

तन्मय प्रायः अपने पापा को डायरी लिखते देखता था। एक दिन उसने पूछा था कि वे रोज डायरी क्यों लिखते हैं? क्या लिखते हैं इसमें? तब पापा ने बताया था कि यह डायरी उनकी सबसे अच्छी दोस्त है। इसे वे रोज बताते हैं कि उन्होंने आज क्या अच्छा काम किया और क्या गलती उनसे हुई। यह डायरी उन्हें अच्छा इनसान बनने में मदद करती है और बुरा इनसान बनने से रोकती है।

तन्मय के पापा ने सभी बच्चों को बताया कि डायरी क्यों और कैसे लिखनी चाहिए। तन्मय की तरह ही हर रविवार को डायरी लिखने का संकल्प सब बच्चों ने लिया। पापा उठ कर अन्दर गए। वे जब आए तो उनके हाथ में सादे कागज के कुछ पन्ने और पेन-पेंसिल थे। हर बच्चे को एक-एक पन्ना दिया और बोले– बच्चो, आज नए वर्ष का पहला रविवार है। क्यों ना इस संकल्प की शुभ शुरूआत आज से ही कर दी जाए।

बच्चे जब अपने घरों को लौट रहे थे तो उनके पास जीवन को सुन्दर बनाने का एक सूत्र था और अपनी डायरी का पहला पन्ना।

प्यारे बच्चो, यह छोटा सा संकल्प आपके और हमारे, हम सब के जीवन को खूबसूरत बनाने में मददगार बन सकता है। आप भी ले रहे हैं ना यह संकल्प!

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

ईर्ष्या भाव से दूर

एक सेठ के घर दो पंडित आए। एक पंडित कार्यवश इधर–उधर गया तो सेठ ने दूसरे से पहले का परिचय पूछा। उसने कहा– ''मेरा अधिक सम्पर्क नहीं है, अभी साथ हुए हैं। लगता है यह तो बना–बनाया बैल है।''

पहला पंडित आया तो कुछ देर बाद दूसरा पंडित किसी कार्यवश बाहर गया। उससे दूसरे पंडित का परिचय पूछा गया तो उत्तर मिला– ''यह तो पंडित क्या है, गधा है।''

सेठ ने भोजन के समय एक के सामने चारा और एक के सामने भूसा रख दिया। यह सत्कार देखकर पंडितों ने अपना अपमान समझा। सेठ को भला–बुरा कहने लगे। सेठ ने कहा– ''मुझे तो आप दोनों ने परस्पर यही परिचय दिया था।'' दोनों पंडितों के सिर झुक गए।

कथाबोध– स्वयं को श्रेष्ठ समझना और अन्य को कम आंकना यह ईर्ष्या के कारण भी होता है। ईर्ष्याभाव से दूर रहने में ही मन को शांति मिलती है।

पद्य कथा

युग बदल गया

उड़ता उड़ता कौआ आया,
लिए चोंच में रोटी।
जा बैठा बरगद के ऊपर,
जिसकी डाली मोटी।

उसी पेड़ के नीचे बैठी,
एक लोमड़ी चालू।
किया विचार टूक रोटी का,
कौए से गिरवा लूँ।

तब वह बोली 'प्यारे कोई,
अब मत करो बहाना।
कई दिनों से नहीं सुनाया,
तुमने कोई गाना।'

दबा टूक अपने पंजे में,
तब फिर मुँह को खोला।
काला चश्मा जरा संभाला,
चतुराई से बोला।

सुनना चाहो गाना मेरा,
तुमको अभी सुनाऊँ।
है मोबाइल पास में मेरे,
उसका बटन दबाऊँ।

जी भर कर तुम मन बहलाओ,
मैं लूँगा चटखारे।
युग कितना अब बदल गया,
न बदले बोल तुम्हारे।

अंजीव अंजुम
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

लीना की सहेली

शाम का समय था। अनूप, लीना और कैथरीन तीनों स्कूल से वापस घर की ओर लौट रहे थे। कैथरीन लीना की छोटी बहन थी। वे तीनों केरल राज्य के अल्लापुझा में रहने वाले थे। वे तीनों आपस में बातें करते हुए तेजी से घर की ओर बढ़ते चले जा रहे थे। घर पहुँचने के लिए अभी उन्हें नाव द्वारा पथिलचिरा बोट जेट्टी तक पहुँचना था। उन्होंने नाव का इन्तजार किया। जैसे ही नाव उनके पास आई वे तीनों अन्य सवारियों के साथ नाव पर चढ़ गए और धीरे–धीरे पथिलचिरा बोट जेट्टी के निकट पहुँच गए। नाव से उतरकर वे तीनों तालाब के किनारे–किनारे नए बने हुए बन्ध के ऊपर से होकर चलने लगे। सबसे आगे लीना थी उसके पीछे कैथरीन और सबसे पीछे अनूप एम था। यह 28 जुलाई 2009 की घटना है।

घाट पर पीछे स्कूल के कुछ और बच्चे भी आ रहे थे। वे भी उनके परिचित थे। उनमें से एक लीना की सहेली थी। उसने जब लीना को अपने आगे जाते देखा तो जोर की आवाज देकर उसे बुलाया। अपने पीछे से आती सहेली की आवाज को सुनकर बन्ध पर चलती हुई लीना ने जैसे ही पलटकर पीछे की ओर देखा, अचानक उसका पैर फिसल गया। जब तक वह सँभल पाती, वह सरकती हुई ताल में जा गिरी। उस ताल की गहराई चौदह फीट थी। लीना को तैरना नहीं आता था। उसने बचने के लिए हाथ पाँव चलाए मगर इससे उल्टा हुआ बजाय बच पाने के, वह जल्दी डूबने लगी।

उसे इस तरह गिरते और फिर पानी में डूबते देखकर उसकी छोटी बहन कैथरीन चीखने लगी। वह चीखी– ''अरे, कोई मेरी दीदी को बचाओ! उसे तो तैरना भी नहीं आता है। कोई मेरी दीदी की मदद करो। नहीं तो वह डूब जाएगी।''

मगर वहाँ आस पास कोई ऐसा नहीं था जो उसकी इस पुकार को सुनकर मदद के लिए आ पाता। जब कोई नहीं दिखाई दिया तो अनूप ने फौरन अपनी स्कूल की यूनीफार्म के जूते और मोजे उतारे और लीना को बचाने के लिए ताल में कूद गया। वह तेजी से तैरता हुआ लीना की ओर बढ़ा। उसने देखते ही समझ लिया था कि लीना को तैरना नहीं आता था क्योंकि जब तक अनूप उसके पास पहुँचता तब तक वह पानी में कई डुबकियाँ खा चुकी थी।

इस बीच उसके पेट में काफी पानी जा चुका था। उसकी स्थिति कुछ–कुछ अचेत जैसी हो रही थी। अनूप की उम्र अभी सिर्फ बारह साल की थी। लीना उससे बड़ी थी और शरीर में वजनदार भी थी।

मगर फिर भी अनूप ने लीना के पीछे से जाकर उसके बालों और कपड़ों को पकड़ा और उसे पूरी ताकत से बाहर की ओर खींचने लगा। तालाब की गहराई को ध्यान में रखते हुए उसने खुद को व्यवस्थित किया।

अनूप ने एक हाथ से लीना को पकड़ा और ताल की सतह पर संतुलन बनाते हुए किनारे की ओर बढ़ने लगा। किनारे पर पहुँचकर उसने सावधानीपूर्वक लीना को बाहर निकाला और फिर उसे चट्टान पर लिटा दिया। यद्यपि इस प्रयास में

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

स्वस्थ दिनचर्या

इस शीर्षक के अन्तर्गत गत अंक में जागरण, भ्रमण, योग एवं अध्ययन के बारे में बताया गया। इसी क्रम में आगे पढ़ें–

मनोरंजन– दिनचर्या की सभी गतिविधियाँ प्रसन्नतापूर्वक करने से शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है। तनाव में आकर कोई कार्य न करें। घर पर मनोरंजन के जो साधन हैं, जैसे टी.वी., पत्रिकाएँ, संगीत उपकरण आदि का विवेकपूर्वक उपयोग करें। मनोरंजन का समय निश्चित करें। विद्यालय की सह–शैक्षिक गतिविधियों में अवश्य भाग लें।

भोजन – शुद्ध, सात्विक और संतुलित भोजन दिन में दो बार से अधिक न करें। भोजन के नियमों का पालन करें। यदि सम्भव हो तो पन्द्रह दिन में अथवा माह में एक दिन उपवास रखें अथवा केवल फलाहार पर रहें।

स्वास्थ्य परीक्षण– प्रायः सभी विद्यालयों में स्वास्थ्य के परीक्षण की व्यवस्था होती है। यदि ऐसा नहीं है तो अपने माता–पिता या अभिभावक के सहयोग से अपने स्वास्थ्य का परीक्षण अवश्य कराएँ। आँखों, दाँतों तथा कानों का परीक्षण विशेष रूप से कराना चाहिए।

घरेलू कार्य – घर में ऐसे कई कार्य होते हैं जिनमें आप सहयोग कर सकते हैं। अपनी दिनचर्या में इन कार्यों के लिए समय निकालें। इससे परिवार में प्रेम बढ़ता है। श्रम की आदत बनती है।

1. अपने छोटे–छोटे काम, जैसे– अपना बिस्तर व्यवस्थित करना, अंतःवस्त्रों की धुलाई, पुस्तकों या वस्त्रों का रख–रखाव आदि दूसरों से न कराएँ। अपने कार्य स्वयं करना स्वावलम्बन का पहला पाठ है।

2. बड़ों की सेवा करनी चाहिए और छोटे–मोटे कार्यों में उनका सहयोग करना चाहिए। उनके अनुभवों को सुनें और उनसे शिक्षा लें।
3. विद्यालय से अवकाश के दिन, मनोरंजन के साथ अधूरे पड़े घरेलू कार्यों को पूरा करना चाहिए।

निद्रा– दिनचर्या की सभी गतिविधियों का अन्तिम चरण निद्रा या नींद है। 6–10 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों के लिए 8–9 घंटे की नींद आवश्यक मानी गई है।

1. देर रात तक कभी न जागें। रात्रि में 9–10 बजे के बीच सोने का समय निश्चित करें। इस समय सोने से नींद पूरी हो जाती है और आप प्रातः सूर्योदय से पहले उठ सकते हैं।
2. सोने का स्थान शुद्ध वायु वाला हो। बिस्तर समतल व कड़ा हो। पतले और मुलायम तकिये का प्रयोग करें। मुँह ढककर कभी न सोएँ। मंद प्रकाश अथवा अँधेरे में नींद अच्छी और गहरी आती है।

सोते समय सीधा लेटे हुए तीन बार सुप्त ताड़ासन करें। इसके बाद शरीर को शिथिल और मन को शान्त करें। संकल्प करें और अनुभव करें कि श्वास के साथ शरीर की कोशिकाओं में शान्ति प्रवेश कर रही है। श्वास छोड़ते समय अनुभव करें कि चारों ओर कमरे में शान्ति फैल रही है। 'मैं गहरी नींद में जा रहा हूँ। प्रातः 5 बजे उठ जाऊँगा।''– का मानसिक संकल्प करें। इसे योगनिद्रा कहते हैं।

झूठी शान

नीलम झील के पास कोकिल वन झमाझम वर्षा से हरा–भरा हो गया। वन्य जीव खुशियों से नाच उठे। झील के किनारे वाली पर्वत श्रृंखलाएँ हरी–भरी हो गई। कई जगह तो झरने चलने लगे थे। धरती पर उग आई बेलें भी यहाँ वहाँ दूर–दूर तक फैलने लगी।

कोकिल वन में यों तो हजारों पेड़ थे, लेकिन कुछ पेड़ अपनी उम्र के आखिरी पड़ाव पर थे। वे हरे भरे पत्तों के बिना सूखे थे। ऐसे ही एक पेड़ के पास वाली धरती पर पड़ी बेल ने उसका सहारा ले लिया। धीरे–धीरे वह अपनी वृद्धि के लिए सूखे पेड़ पर ऊपर की ओर पहुँच कर अपने भाग्य पर इठलाती रही।

वहीं उसके साथ की एक दूसरी बेल, जिसने ऊँचा बढ़ने के लिए किसी का सहारा नहीं लिया, वह जमीन पर फैल कर धरती का हरा–भरा श्रृंगार करती रही।

एक दिन पेड़ के शिखर पर चढ़ी बेल ने नीचे पड़ी बेल से कहा– ''देख तेरा भाग्य, पैदा हुई जब से धरती पर ही पड़ी हुई है। मुझे देख, पेड़ के ऊपरी हिस्से की शोभा बनी हुई हूँ। यहाँ तक मैं अपनी मेहनत से पहुँचकर दूर–दूर के वन के सुन्दर दृश्य देख लेती हूँ और सुबह सूर्योदय का रंगीन नजारा देखने का मनमोहिनी आनन्द है। ये हैं भाग्य के खेल।''

धरती की बेल ने जीवन की सच्चाई बताते हुए कहा– ''हमारा गौरव तो धरती को हरा–भरा बनाये रखने में है, न कि जबरदस्ती किसी का सहारा लिये ऊपर उठकर इतराने में।'' पेड़ पर चढ़ी बेल ने धरती वाली बेल से कहा– ''अरी, तू किस्मत की मारी, जब किसी का कोई सहारा न मिला, तो व्यर्थ के उपदेश देने में लगी है। किसी पेड़ पर चढ़ने में भी तो हिम्मत की जरूरत है। वैसे ही कोई थोड़े ही चढ़ जाता है।''

अब धरती की बेल ने उसकी बातों का कोई उत्तर देना उचित नहीं समझा, और वह अपनी स्वाभाविक गति से अपना कर्त्तव्य निभाती रही।

एक दिन मौसम बदला। तेज हवाएँ चलने लगीं। अचानक बदले ऐसे मौसम से कई सूखे पेड़ धरती पर गिर पड़े। गिरने वालों में वह पेड़ भी था, जिसमें वह बेल चढ़ी हुई इतरा रही थी। जैसे ही पेड़ गिरा वह बेल उसी के नीचे दबकर कई जगह से टूट गई। अब वह दर्द के मारे कराह रही थी और वह धरती वाली बेल की तरफ शर्मिन्दगी वाले भाव से देख रही थी। वह आँखों में आँसू लेते हुए धरती वाली बेल से अपनी झूठी शान पर पश्चाताप करने लगी।

धरती की बेल ने उसे सबक सिखाते हुए कहा– ''बहिन! हमें सदा अपनी क्षमता से ही आगे बढ़ना चाहिये। जो दूसरे का सहारा लेकर आगे बढ़ते हैं, उनका अन्त भी एक दिन ऐसे ही होता है।'' जीवन की यह शिक्षा देकर धरती की बेल, फिर आगे बढ़ गई।

दिनेश विजयवर्गीय
बून्दी (राजस्थान)

गुनगुन गाए मैना

खुश हो, गुनगुन गाए मैना।
नए साल में है फिट रहना।।

नए वर्ष का हुआ सवेरा,
डाला नव किरणों ने डेरा।
बच्चों को है अभी जगाना,
सुबह की ताज़ा हवा खिलाना।

बीत गई है देखो रैना।
खुश हो, गुनगुन गाए मैना।।

अभी मुझे है उन्हें जगाना,
मुँह उनके हैं अभी धुलाना।
फल ताज़े हैं उन्हें खिलाना,
थोड़ा है उनसे बतियाना।

सिखलाना है मीठे बैना।
खुश हो, गुनगुन गाए मैना।।

सबसे बोलें मीठी बानी,
बच्चों को यह कला सिखानी।
बनें न दंभी, न अभिमानी,
करें न कोई वो शैतानी।

अगर हमेशा है खुश रहना।
खुश हो, गुनगुन गाए मैना।।

वसीम अहमद नगरामी
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

नव वर्ष आया है

नव वर्ष फिर से आया है
देखो धूम मचाता।
नई उम्मीदें नई उमंगें
मन में पुनः जगाता।।

फिर से हमको सभी महीने
मौसम सभी मिले हैं।
नई–नई आशाओं के फिर
सुन्दर पुष्प खिले हैं।।

माना नहीं हाथ में अपने
जीवन लेखा जोखा।
लेकिन रहकर भाग्य भरोसे
खाएँगे हम धोखा।।

छोटे–छोटे संकल्पों से
काम बड़े हो जाएँ।
जैसे छोटे कदम बढ़े तो
मंजिल तक पहुँचाएँ।।

नए वर्ष में हम भी कोई
ऐसा नियम निभाएँ।
हो सबको सुख देने वाला
जीवन सफल बनाएँ।।

आओ! हम सब मिलकर ही अब
उत्सव आज मनाएँ।
मंगलमय नववर्ष सभी को
दुआ यही कर जाएँ।।

कुसुम अग्रवाल
कांकरोली (राजस्थान)

सूरज डूबा आसमान में

सूरज डूबा आसमान में,
चन्दा निकला अपने घर से।
तारे भी संग उसके निकले,
छिपे थे जो सूरज के डर से।

नीलगगन में तब धीरे से,
मखमल जैसी चाँदनी फैली।
आँख–मिचौली तब तारों ने,
टिमटिमाते रात भर खेली।

परियों का भी आसमान में,
आना जाना शुरू हो गया।
धरती पर हर प्राणी उनके,
सुनहरे सपनों में खो गया।

बीती रात, हुआ उजियारा,
सूरज मामा हँसते आयें।
चंदा–तारे, छिप गयी परियाँ,
उसकी गर्मी से घबराये।

शैलेन्द्र सरस्वती
बीकानेर (राजस्थान)

बालक बना महान

निर्बल का सहारा: साहित्य का सितारा

महाश्वेता देवी

जो व्यक्ति दुर्बल और असहाय लोगों के बारे में सोचता है, उनकी सेवा और सहायता करता है वही सच्चे अर्थों में अच्छा इनसान होता है। इसी मंत्र को जीवन में उतारा महाश्वेता देवी ने।

महाश्वेता देवी एक प्रतिष्ठित लेखिका और समाजसेविका थी। उनके मन में निर्धन लोगों के लिए बहुत दया थी। वह अपने आस–पास के आदिवासियों की समस्याओं को लेकर सदा चिंतित रहती थी और उनकी समस्याओं को दूर करने के लिये स्वयं कष्ट सहकर भी प्रयास करती थी और उनके साथ हो रहे अन्याय का विरोध करती थी। वह एक प्रसिद्ध लेखिका थी। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी तथा उन्हें देश के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया गया।

जीवन परिचय

महाश्वेता देवी का जन्म 14 जनवरी 1926 को ढाका में हुआ। उस समय ढाका भारत का ही एक अंग था। उनके पिता का नाम मनीष घटक था, वह एक जाने–माने कवि और उपन्यासकार थे। उनकी माँ श्रीमती धारित्रि देवी भी लेखिका तथा समाज सेविका थी। बचपन में उनकी शिक्षा ढाका में हुई पर जब वह किशोर आयु की थीं, तब भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद उनका परिवार पश्चिम बंगाल में रहने लगा। उन्होंने कोलकाता आगे की शिक्षा पूरी की।

महाश्वेता देवी ने विश्वभारती विश्वविद्यालय, शान्ति निकेतन से अँग्रेजी में बी. ए. आनर्स की शिक्षा प्राप्त की। यह विश्वविद्यालय बहुत प्रतिष्ठित था और महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने स्थापित किया था। महाश्वेता ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अँग्रेजी में एम. ए. आनर्स की शिक्षा प्राप्त की। उस समय में एक महिला के लिए इतना पढ़ा–लिखा होना बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

बचपन से लेखन

महाश्वेता के माता–पिता साहित्यकार थे और परिवार में साहित्यिक वातावरण था अतः प्रारम्भ से ही उनके अन्दर लेखन के प्रति रुचि थी। उन्होंने अपना अधिकांश लेखन कार्य अपनी मातृभाषा बांग्ला में किया। जब वह पढ़ाई कर रही थीं तभी से उन्होंने लघुकथा और कविताएँ लिखना प्रारम्भ कर दिया था।

पढ़ाई पूरी करने के बाद उनका विवाह प्रसिद्ध नाटककार श्री बिजोन भट्टाचार्य से हुआ। उनके एक पुत्र भी हुआ जिसका नाम नबरुन भट्टाचार्य था तथा बड़े हो कर वह भी प्रसिद्ध साहित्यकार बना जो यह सिद्ध करता है कि महाश्वेता जी एक अच्छी बेटी तथा अच्छी माँ थी जिन्होंने अपने माता–पिता से प्राप्त प्रतिभा को सँवारा साथ ही अपने बेटे को भी अच्छी शिक्षा और संस्कार दिये ।

महाश्वेता जी का साहित्य

महाश्वेता जी ने प्रारम्भ में कविताएँ लिखी फिर वर्ष 1956 में उन्होंने पहली कथा लिखी 'झांसी की रानी' जो उस समय से लगभग सौ वर्ष पूर्व 1857 से 1858 के बीच की रानीलक्ष्मी बाई से सम्बन्धित घटनाओं पर आधारित थी। अपनी कथा लिखने के लिए उन्होंने बहुत श्रम किया, वह झांसी, काल्पी,

ग्वालियर, ललितपुर के जंगल, जबलपुर, पुणे, सागर, इंदौर आदि स्थानों पर स्वयं गयी और 1857 में अँग्रेजों के विरुद्ध हुई क्रान्ति के बारे में सूचना एकत्र करके कथा लिखी। फिर 1857 में 'नाती' नाम से उपन्यास लिखा जो प्रसिद्ध हुआ।

महाश्वेता जी उस समय के अनुसार प्रगतिशील विचारों की थी और 1964 में उन्होंने बिजोयगढ़ कालेज में पढ़ाना प्रारम्भ किया। बाद में वह कलकत्ता विश्वविद्यालय में पढ़ाने लगी। साथ में वह पत्रकारिता और लेखन का कार्य भी करती रही। इसी बीच उन्होंने बंगाल के लोढ़स और शबर्स जाति के आदिवासियों के बारे में अध्ययन किया और शोधपूर्ण लेख लिखें।

उनके लगभग 100 उपन्यास एवं 20 कहानी संग्रह प्रकाशित हुए जिसमें से 'नटी', मातृछवि', 'अग्निगर्भा', 'धौली', 'डस्ट आन द रोड', 'अवर नानवेज काउ', 'बुशाई', 'तुडु', 'रुदाली', 'डाकदे कहिनी', ओल्ड वोमेन', 'टिल डेथ डू अस पार्ट', ' जंगल के दावेदार', '1084 की माँ' आदि प्रमुख हैं।

उनकी कई रचनाओं पर फिल्में भी बनी हैं, जैसे 'रुदाली', 'हजार चौरासी की माँ' आदि। महाश्वेता देवी की अनेक पुस्तकों का हिन्दी में भी अनुवाद किया गया है। उदाहरण के लिए अक्लांत गौरव, अग्निगर्भ, अमृत संचय, आदिवासी कथा, आदि।

समाज सेवा में समर्पित

महाश्वेता जी का धन और जीवन दूसरों के लिए था। उनके जीवन का लक्ष्य ही लेखन और असहाय लोगों की सेवा करना था, अतः उन्होंने वर्ष 1984 में अपनी नौकरी से अवकाश ले लिया और अपने लक्ष्य को पूरा करने में तन–मन–धन से समर्पित हो गयी। उनकी कहानियों और उपन्यासों में भी इन्हीं के बारे में अधिक लिखा गया है। वह दुर्बल और गरीब लोगों के प्रति सहानुभूति रखती थी और उनको अपने लेखन की प्रेरणा मानती थी। उन्होंने जमींदारों के द्वारा जनता पर अत्याचार तथा उस समय की सरकार के अन्याय का अपने उपन्यासों और कहानियों में भी वर्णन किया है।

अपने लेख लिखने के लिए जब वह आदिवासियों के बीच गयीं उनकी गरीबी और परेशानियों को देखकर उनके कोमल मन को बहुत दुःख हुआ। उसके बाद उन्होंने उनकी सेवा करने का निर्णय लिया। वह पूरे देश में घूम–घूम कर आदिवासियों और गरीबों की परेशानियों के बारे में पता करके उनकी सेवा करने लगी। बिहार, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ जैसे इलाकों में आदिवासी अधिक रहते थे और उनकी स्थिति दयनीय थी। बंगाल की सरकार से उनके अधिकार दिलाने के लिए तथा उनके साथ होने वाले अन्याय के लिए महाश्वेता देवी ने लड़ाई की और आन्दोलन किये।

महाश्वेता जी ने जीवन के अच्छे पक्ष को देखा और उससे प्रेरणा ली। वह जीवन में सदा सबसे कुछ सीखने में विश्वास रखती थीं जिसने उनको जीवन में सफलता प्रदान की। अपनी सुख–सुविधा छोड़कर वह गरीब और दुर्बल लोगों की सेवा करती थी। 90 वर्ष की आयु में जब लोग अपने काम भी नहीं कर पाते वह अपनी चिन्ता छोड़ कर दुर्बल लोगों के लिए चिन्तित थी।

सम्मान और पुरस्कार

यह महाश्वेता जी की योग्यता श्रम और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण था जिसके कारण उनको देश के अनेक महत्त्वपूर्ण पुरस्कार दिये गये। उनको अपने अच्छे साहित्य के लिये भी पुरस्कार मिले और समाजसेवा के लिये भी। उनको साहित्य का देश का प्रतिष्ठित पुरस्कार 'ज्ञानपीठ अवार्ड' भी मिला था।

वर्ष 1979 में उनको साहित्य एकेडमी अवार्ड 1986 में पद्मश्री, 1996 में ज्ञानपीठ अवार्ड, 1997 में रमन मैगसेसे अवार्ड, 1999 में होनोरिस कौसा, 2006 में पद्म विभूषण, 2010 में यशवंत राव राष्ट्रीय अवार्ड, 2011 में बंग विभूषण अवार्ड आदि अनेक पुरस्कार और सम्मान दिये गये। 2012 में उन्हें हाल आफ फेम लाइफटाइम अचीवमेंट साहित्य ब्रह्मा में सम्मिलित किया गया। जनवरी 2018 में महाश्वेता जी के 92वें जन्मदिन पर गूगल ने उन्हें सम्मान देते हुए उनका गूगल डूडल बनाया। यह हमारे देश के लिये गौरव की बात है।

परमवीर चक्र विजेता

रामा स्वामी परमेश्वरन

भारत का परमवीर सैनिक
श्रीलंका भी जिसको माने,
रामास्वामी परमेश्वरन को
अब कौन नहीं बच्चो! जाने!

सैनिक बन शान्ति सैन्य का वो
श्रीलंका में जब आये थे,
जो भी फैला आतंक रहे
उनसे बच्चो! भय खाये थे।

एक दिन श्रीलंका में ही जब
दुश्मन ने उनको घेर लिया,
उन ने भी तब घेराबन्दी कर
एक–एक को था ढेर किया।

पर, आखिर में लड़ते–लड़ते
उन ने भी प्राण गँवाया था,
ऐसा करके श्री लंका में
भारत का मान बढ़ाया था।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल
नई दिल्ली

ज्ञानपीठ अवार्ड उनको नेल्सन मंडेला के हाथों से प्रदान किया गया था जिसमें उनको पाँच लाख की राशि पुरस्कार में दी गयी। महाश्वेता जी ने पुरस्कार में मिली राशि बंगाल के 'पुरुलिया आदिवासी समिति' को दे दिया जो सिद्ध करता है कि वह असहाय के प्रति सच्ची सहानुभूति रखती थीं और मानवता की पुजारी थी।

महाश्वेता जी बड़ी आयु में इतनी मेहनत के कारण बीमार पड़ गयी। उनके शरीर के अन्दर के घाव सड़ने से इन्फेक्शन हो गया। उनकी बीमारी गम्भीर हो गयी थी, अन्त में 28 जुलाई 2016 को उनका देहांत हो गया।

महाश्वेता जी ने जीवन में भी सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त की वह अपने बल पर की। उनकी मानवीय संवेदना, श्रमनिष्ठा, दृढ़ निश्चय और लक्ष्य के प्रति समर्पण ने उनको इस ऊँचाई तक पहुँचाया। वह हम सबके लिए एक प्रेरणा हैं।

अलका प्रमोद
लखनऊ (उत्तरप्रदेश)

DO YOU KNOW

- The longest English word without vowel. - **"Rhythm"**
- Most frequently used letter in English. - **"E"**
- Least frequently used letter in English. - **"Q"**

'लीना की सहेली' पृष्ठ 7 का शेष....

अनूप को काफी थकान हो चुकी थी। मगर फिर भी उसने लीना को प्राथमिक सहायता देने का प्रयास किया।

देर तक पानी में रहने के कारण लीना के पेट में काफी पानी जा चुका था। जिसके कारण उसके होश गुम थे। कैथरीन की चीख चिल्लाहटों का नतीजा यह निकला कि कई राहगीर वहाँ दूर–दूर से आकर जमा हो गए। बाहर के लोगों की मदद मिलने से लीना को जल्दी ही अस्पताल ले जाया गया। जहाँ पर लीना को समय पर डाक्टरी सहायता मिलने से वह ठीक हो गई।

किसी भी बाहरी सहायता की आशा न होने पर अनूप ने जिस साहस के साथ इतने गहरे ताल में छलाँग लगाकर लीना को बचाया। यह उसकी कर्तव्य परायणता, हिम्मत और बहादुरी को दर्शाता है। भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली तक जब उसकी इस वीरता की घटना का विवरण पहुँचा तो उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। अनूप को वर्ष 2011 के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश की राजधानी दिल्ली में आमन्त्रित किया गया और राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

सूखे पत्ते जैसी दिखने वाली इस तितली का नाम है इंडियन ओक लीफ और यह भारत के बहुत सारे राज्यों में मिलती है।

केवल भारत में केरल राज्य के इडुक्की जिले में एक अनोखा फूल होता है नीलकुरिंजी जो बारह साल बाद ही खिलता है।

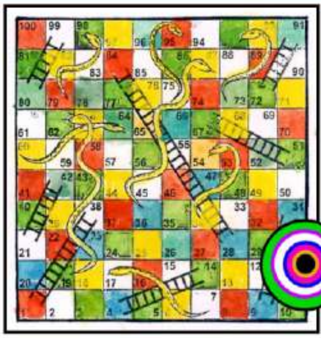

सांप सीढ़ी के खेल को मूल रूप से मोक्षपट कहते थे जिसे तेरहवीं शताब्दी में कवि संत ज्ञानदेव ने तैयार किया था। इस खेल में सीढ़ियां वरदानों का प्रतिनिधित्व करती थीं जबकि सांप अवगुणों को दर्शाते थे। इस खेल को कौड़ियों तथा पांसे के साथ खेला जाता था। आगे चल कर इस खेल में कई बदलाव किए गए, परन्तु इसका अर्थ वही रहा अर्थात अच्छे कर्म लोगों को स्वर्ग की ओर ले जाते हैं, जबकि बुरे काम जन्म-मरण के चक्र में घुमाते रहते हैं।

मौत के 38 साल बाद शहीद की आत्मा को 12.9.06 के दिन सेवानिवृत्ति के अवसर पर पूरे सम्मान के साथ कपूरथला स्थित उनके घर तक पहुंचाया गया था।

सिपाही हरभजन सिंह की सन 1968 में सिक्किम से लगी चीन सीमा पर नाथुला दर्रे की पेट्रोलिंग के दौरान बर्फ़ से दबकर मौत हो गई जिसकी कई दिनों बाद पुष्टि भी हुई पर फिर भी समय-समय पर सेना को इस शहीद की आत्मा की उपस्थिति के प्रमाण मिलते रहे।

ये प्रमाण इतने सबल रहे होंगे कि सिपाही हरभजन को न केवल कप्तान का ऑनरेरी पद दिया गया वरन शहादत के बाद से ही उन्हें हर वर्ष सवेतन व समस्त सुविधाओं के साथ दो माह की छुट्टियां घर पर बिताने का लाभ भी मिलता रहा।

गंगटोक से जालंधर तक आने के लिए ट्रेन में उनकी आत्मा के लिए एक रिज़र्व बर्थ खाली छोडी जाती जहां से अपनी छुट्टियां बिता कर इस आत्मा को अपनी ड्यूटी पर वापसी करनी होती थी। नाथुला में उनके नाम का एक मंदिर भी बना है जो आज भी आस्था का केंद्र बना हुआ है।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

© gyashim@gmail.com/ 0 8077554501

नानी की नसीहत

विनय ने सोने से पहले आँख बचा कर टेबल अलार्म घड़ी की सूई एक घंटा पीछे कर दी ताकि सुबह एक घंटा देर से अलार्म बजे और वह कुछ देर और आराम से सो सके। उसकी तरकीब तो काम कर गई। मगर जब अलार्म बजा और उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि नानी तो बिस्तर में नहीं थी। फिर विनय को और भी आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि नानी घर की साफ सफाई के उपरांत नहा कर अपने केश संवार रही थी।

विनय उबासी लेता हुआ नानी के करीब आया तो वह बोली– ''विनय, अभी तुम्हारे पापा का फोन आया था। तुमने इस बार ध्यान से इम्तिहान नहीं दिए क्या?'' ''क्यों क्या हुआ नानी?'' विनय की आँखें एकदम खुल गई थी। पापा और इम्तिहान की बात से विनय को कुछ संदेह हुआ जैसे नानी उसे कोई बुरी खबर सुनाने जा रही है। उसका शक सही निकला। नानी ने उसे बताया कि उसके जगने से पहले उसके पापा का फोन आया था कि विनय इस वर्ष परीक्षा में फेल हो गया है।

यह सुनकर विनय रोने लगा और बोला– ''यह कैसे हो गया नानी? मेरा परीक्षाफल तो आज आना था। लेकिन मैंने तो अच्छे से एग्जाम दिए थे।'' उस पल विनय को यह भी न सूझा कि परीक्षाफल इतनी सुबह कैसे आ गया? विनय की हालत देखने वाली थी। नानी ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा,'' ''घबराओ मत विनय, इस बार फेल हो गए तो क्या हुआ, अगली दफा खूब पढ़ाई करना। इस साल जी भर कर सो लो।'' और यह कहते–कहते ही नानी की हँसी फूट पड़ी।

''क्या मतलब?'' विनय ने नानी को अचानक हँसते देखा तो हैरानी से पूछने लगा। ''अरे तुम फेल नहीं हुए। मैंने तो जान बूझकर कहा था।''

विनय अपने ननिहाल आया हुआ था। नानी उसे बहुत प्यार करती थीं मगर उसकी बुरी आदतों से नहीं। खासकर विनय के सुबह देर से उठने पर वह खीझ जाती और उसे समझाती– ''बेटा, सुबह जल्दी उठने के बहुत फायदे हैं। लेकिन तुम तो बहुत देर से उठते हो। इतना आलस अच्छा नहीं होता। जीवन में सफल होने के लिए आलस को त्यागना पड़ता है समझे...? सुबह जल्दी उठने और रात को जल्दी सोने से सेहत अच्छी रहती है। दिमाग तेजी से काम करता है। जो लोग सूर्य उगने के बाद बिस्तर छोड़ते हैं, वह सेहत के मामले में कमजोर रहते हैं।'' मगर विनय पर नानी की नसीहत का कोई असर न था। वह आदत से मजबूर था।

एक सुबह नानी ने उसे जबरदस्ती अपने साथ ही उठाया और कहा– ''अब तुम रूठो या मुझे बुरा कहो। मगर रोजाना ऐसे ही मेरे साथ ही सुबह जल्दी उठोगे।'' उस पल विनय को नानी पर गुस्सा आया मगर मन मसोस कर रह गया। फिर नानी की जिद से छुटकारा पाने के लिए उसे एक तरकीब सूझी। नानी मेले से एक टेबल अलार्म घड़ी लाई थी और अब अलार्म के बजने के साथ ही उठती थी।

''तुमने ऐसा मजाक क्यों किया नानी?'' विनय कुछ सहज होते हुए बोला तो नानी ने कहा– ''अगर तुम बड़ों को बेवकूफ बना सकते हो तो क्या मैं तुम्हारे साथ इतना सा मजाक भी नहीं कर सकती? कल रात तुमने अलार्म घड़ी की सूई के साथ जो छेड़खानी की थी। मगर मुझे तो सुबह जल्दी जगने की आदत है सो अलार्म के बजने से पहले ही आँख खुल गई। अब तुम भी यह अच्छी आदत डाल ही लो।'' ''अब ऐसे गुस्से से मत देखो। दूसरों को अँधेरे में रखा तो ठीक लेकिन जब खुद को एक पल का झूठ सुनना पड़ा तो काँप उठे। चलो अब मुस्कुराओ।'' नानी ने विनय को गुदगुदी करते कहा।

विनय के भी मन का डर जाता रहा कि नानी तो मजाक कर रही थी। मगर इस मजाक के बाद उसे अहसास हुआ कि नानी जो कह रही है वह सही है। उसने नानी के सामने दिल से संकल्प किया कि आइंदा किसी को भी धोखा नहीं देगा और आलस छोड़कर सुबह जल्दी उठने की आदत डालेगा। विनय के हाव भाव देखकर नानी को विश्वास हो गया था कि विनय सच कह रहा है। वह एक पेन विनय की ओर बढ़ाते हुए बोली– ''यह पेन तुम्हें उपहार दे रही हूँ क्योंकि तुम अपनी बुरी आदत यही छोड़ कर आज अपने मम्मी–पापा के पास लौट रहे हो।''

विनय ने पेन लेकर उसे अच्छी तरह देखा और बोला– ''अरे नानी, इसमें तो समय देखने के लिए घड़ी भी है। मैं समझ गया।'' ''क्या?'' ''यही कि तुमने यह घड़ी वाला पेन मुझे इसलिए दिया है न कि आज से मैं समय की कद्र करना सीख ही लूँ।'' विनय ने आँखों में शरारत लाते मुस्कुरा कर कहा तो नानी भी उसकी बात से मुस्कुराने लगी।

विनय मम्मी–पापा के पास लौटा तो उसमें आए परिवर्तन को देखकर उसके मम्मी–पापा खुश थे। विनय न केवल सुबह जल्दी उठने लगा बल्कि अपना बिस्तर छोड़ने के बाद उसे अच्छी तरह सँवार भी देता था। नानी की नसीहत उसे याद थी।

हरिन्दर सिंह गोगना
पटियाला (पंजाब)

दिमागी कसरत

निम्नलिखित वाक्यों में प्रत्येक में हिंदी भाषा संबंधी एक त्रुटि है। आप उसे सुधार कर वाक्य को सही रूप में लिखें और दिये गए उत्तर से मिलान करें.

1. मुझे बच्चो का देश पत्रिका अच्छी लगती है।
2. इस कम्बल की कीमत 500 रूपया है।
3. रात को स्वंयसेवक निगरानी रखेंगे।
4. मेहनत करने वालों का भविष्य उज्जवल होता है।
5. आपका आज का प्रस्तुतिकरण बहुत ही अच्छा रहा।
6. हमारी सरकार ने सेनिकों के हित में यह निर्णय लिया है।
7. हमें समाजिक कार्यों में अवश्य भाग लेना चाहिए।
8. आपकी पार्टी का चुनाव चिन्ह क्या है?
9. यहाँ अंग्रेजी दवाईयाँ मिलती है।
10. गरीब किसान की झोंपड़ी टूटी हुई थी।
11. यह कुँआ कितना गहरा है?
12. दशहरा मेला कल से शुरु होगा।
13. हिंदी शब्दकोष देखना भी आसान है।
14. यहाँ प्रतिभावान बालकों को छात्रवृति मिलती है।
15. महादेवी वर्मा एक महान कवियत्री थी।

प्रकाश तातेड़,
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

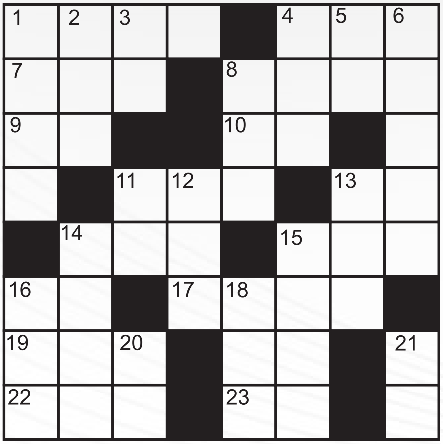

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. किसी पुस्तक को छपवाना (4)
4. हिन्दी वर्ष (3)
7. जोड़ने वाला, मिलाने वाला (3)
8. बीजों का मातृ पौधे से दूर जाकर गिरना (4)
9. नीर, अम्बु, पानी (2)
10. महीन पीसा हुआ पाउडर (2)
11. मधुमक्खी के छत्ते जैसी मिठाई (3)
13. खाता, शीर्ष (2)
14. सूअर, शूकर (3)
15. मुख, चेहरा (3)
16. मनुष्य, लोग (2)
17. बौद्ध धर्म की एक शाखा (4)
19. बेटी का बेटा, दोहिता (3)
21. संन्यासी, साधु (2)
22. बेल बूटे का काम (3)
23. चार व तीन का योग (2)

ऊपर से नीचे :

1. लक्ष्य, उद्देश्य (4)
2. कजरा, अंजन (3)
3. संदेह, सुबहा (2)
4. संकरा (3)
5. हिन्दी वर्णमाला का हिस्सा, रंग (2)
6. काया, शरीर के दो पर्यायवाची (2, 3)
8. बहुतायत में, भरपूर (3)
11. वृत, गोलाकार (2)
12. भ्रम, भ्राँति (3)
13. चिन्तन, सोच, समझना (3)
14. जंगल में रहने वाला (4)
15. बाहर से आया हुआ, मँगाया हुआ (4)
16. जन्म देने वाला, सीता जी के पिता (3)
18. दुर्घटना, मुसीबत (3)
20. सीधा, सरल, कोरा (2)
21. जल का प्रवाह (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि वृक्ष कभी अपने फल नहीं खाते, नदी जल को कभी अपने लिए संचित नहीं करती, उसी प्रकार सज्जन परोपकार के लिए देह धारण करते हैं।

वृक्ष कबहूँ नहीं फल भखैं, नदी न संचै नीर,

परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर!

बनो उपकारी

बोले हमसे बच्चन लाला,
बड़े काम का बच्चो ताला।

जन्म नहीं जो इसका होता,
मेरा कैसे बचता माल।
एक रात में ही मिल मुझको,
कर जाते सब चोर हलाल।।

बिना दिहाड़ी भूखा प्यासा,
मुझको मिला हुआ रखवाला।...

जब भी हम बाहर जाते हैं,
दरवाजे पर इसे लगाते।
इसके कारण ही निश्चिंतता
हम सब सारी मन में पाते।।

पर उपकारी इसके जैसा,
ढूँढ़े ना ही मिलने वाला।...

जब तक जीवन तब तक सुरक्षा,
तन में तनिक नहीं गद्दारी।
ऊँच नीच का भेद न जाने,
एक समान कर पहरेदारी।।

नित मालिक की बजा हाजरी,
दर्जा अपना रखता आला।...

बच्चो, तुम भी ताले जैसे,
बनो जिन्दगी में उपकारी।
तुम पर नित ही नाज करेगी,
दुनिया के सँग खुद महतारी।।

कर पाओगे यदि ऐसा तो,
फेरेंगे सब घर—घर माला।
बोले हमसे बच्चन लाला।।

पवन पहाड़िया
डेह नागौर (राजस्थान)

माँ, किसने मोती बिखराए

माँ, किसने मोती बिखराए
देखो आकर, हरी घास पर
झिलमिल करते मन को भाते
दे दो सारे मुझको लाकर।

माँ बोली, ये ओस—बिन्दु हैं
आसमान से नीचे आते
नमी हवा की पानी बनती
मोती जैसे हैं ढल जाते।

जाड़े की रातों में जलकण
धीरे—धीरे नीचे झरते
जाते जब हम सुबह सैर को
शबनम बन कर स्वागत करते।

नभ से आती ये बूँदें भी
फसलों में हरियाली भरती
हरे—भरे चौड़े पत्तों पर
हँसती, गाती, खूब थिरकती।

श्याम पलट पांडेय
अहमदाबाद (गुजरात)

पेड़ लगाएँ

पेड़ लगाएँ हम घर—बाहर
जो दें सबको हरियाली,
पेड़ लगाएँ जिससे आए
गाँव—शहर में खुशहाली।

पेड़ नहीं, ये शिव हैं भाई
विष सारा ही पी जाएँ,
पेड़ लगाएँ जो हम सबको
शुद्ध वायु फिर दे पाएँ।

पेड़ लगाएँ जो दें औषध
अन्न, फूल, फल मन भाए,
अमृत का घट इनमें, जिससे
सुख के अतुल रतन पाएँ।

पेड़ों की महिमा अनन्त है
जन—जन को हम बतलाएँ,
इनसे ही वन, बाग—बगीचे
पर्यावरण बचा पाएँ।

डॉ. भैरूँ लाल गर्ग
भीलवाड़ा (राजस्थान)

झूठ का ऑपरेशन

पात्र : सभी 10–12 वर्ष के बच्चे : मरीज, डॉक्टर, नर्स, सहायक, फौजी, माँ, जादूगर की भूमिका में

(परदा उठता है। स्टेज पर बीचों बीच एक मेज रखी है। उस पर मरीज बना एक लड़का लेटा है। उसका पेट पहाड़ सा फूला है। सामने माली की कैंची लिए डॉक्टर (लेडी) है। नर्स है जिसके हाथ में पिचकारी जैसा इंजेक्शन है और सहायक के रूप में एक लड़का है जिसके हाथ में साइकिल में हवा भरने का पम्प है)

डॉक्टर, नर्स और सहायक मरीज की मेज के चारों ओर चक्कर लगाते हुए गाते हैं। तू क्यों है भयभीत, तू क्यों है भयभीत सुन.. सुन डर के आगे है जीत, डर के आगे है जीत! मरीज मेज पर डर से उकड़ूँ होकर बैठ जाता है और हाथ हिलाकर 'नहीं' का इशारा करता है। तभी स्टेज पर फौजी का प्रवेश

फौजी : अटेन्शन! कटाई डिपार्टमेन्ट तैयार?

डॉक्टर : (अपनी कैंची लहराते हुए) यस सर!

फौजी : ठुकाई डिपार्टमेन्ट तैयार?

नर्स : (इंजेक्शन लहराते हुए) यस सर!

फौजी : प्राण भराई डिपार्टमेन्ट तैयार ?

सहायक : (पम्प को लहराते हुए) तैयार!

फौजी : मरीज! ऑपरेशन को तैयार?

मरीज : मगर मुझे हुआ क्या है?

फौजी : तुम बहुत खाते हो! बेसुरा गाते हो! ढोल बजाते हो!

मरीज : ढोल.. कैसा ढोल? मैं ढोल नहीं बजाता!

फौजी : हम सब ने जोर–जोर से आवाजें सुनी है।

मरीज : अरे वह ढोल नहीं है!

फौजी : डॉक्टर! तैयार! एक्शन!

डॉक्टर : तैयार! नर्स इंजेक्शन

मरीज : मम्मीऽऽ! बचाओ।

(मम्मी का छड़ी लेकर प्रवेश)

मम्मी : खबरदार! ये क्या हो रहा है?

डॉक्टर : आंटी! गोलू का ऑपरेशन हो रहा है!

मम्मी : ऑपरेशन! क्या इस झाड़ काटने वाली कैंची से?

डॉक्टर : दर्द नहीं होगा। पहले इंजेक्शन लगाएँगे।

मम्मी : इस पिचकारी जैसे इंजेक्शन से ? और

सातवीं पास इस निक्की को डॉक्टर किसने बनाया।

फौजी : आंटी! आप ....!

मम्मी : क्याऽऽऽ? अरे नासमझो। सीधे ऑपरेशन करने बैठ गए। मेरे गोलू का पेट तो दवा पिलाने से ही पिचक जाता।

नर्स : आंटी! आपने इसे इतना नाश्ता करा दिया था कि ये दो चम्मच सिरप लेने लायक भी नहीं था।

सहायक : और आंटी इसका पेट ठसाठस भरा हुआ है पिचका–पिचका कर मेरी हथेली पिचक गई पर इसका पेट तंबूरे जैसा तना हुआ है इसे इतना क्यों खिलाती हो?

मम्मी : अरे खाने–पीने की वजह से नहीं फूला है इसका पेट।

फौजी : तो फिर क्या है इसकी वजह? काटेंगे नहीं तो कैसे पता चलेगा?

मम्मी : ये फौजी! ध्यान से सुन इसके पेट फूलने की वजह!

डॉक्टर : क्या है?

मम्मी : झूठ बोलना! ये चौबीस घंटे में चार सौ चौबीस बार झूठ बोलता है।

नर्स : चार सौ चौबीस!

मरीज : ये झूठ है?

डॉक्टर : क्या मतलब। आंटी भी झूठ बोलती है?

नर्स : तो हमें दो ऑपरेशन करने होंगे?

मम्मी : ओफ्फो! कैसे अनाड़ी डॉक्टर से पाला पड़ा है। बच्चो! तुम खुद देख लो! इसे एकदिन झूठ मत बोलने दो। फिर इसका पेट अपने आप ठीक हो जाएगा।

फौजी : मशीनगन से गोली रोकना आसान है। लेकिन गोलू के मुँह से झूठ रोकना नामुमकिन!

नर्स : एक तरीका है!

फौजी : वो क्या है?

नर्स : इसे इंजेक्शन लगाकर बेहोश रखो!

मम्मी : बकवास मत करो!

मरीज : मैं झूठ नहीं बोलूँगा! मुझे जाने दो। घर जा के आलू के परांठे खाने दो।

मम्मी : खाने के लिए। ये कोई भी झूठ बोल सकता है।

डॉक्टर : आंटी! गोलू और कब झूठ बोलता है?

मम्मी : जब उसे किसी काम के लिए बोला जाता है। जब खाना खाने से रोका जाता है। जब ज्यादा टीवी देखने से रोका जाता है। जब बहन के साथ झगड़ने से रोका जाता है और जब लापरवाही के लिए कुछ कहा जाता है।

फौजी : इतने सारे रीजन्स। इसे तो दूर कर सकता है सिर्फ कोई मैजिशियन। किसी मैजिशियन को बुलाओ?

सहायक : (जोर से पुकार कर) जादूगर. हाजिर हो। जादूगर हाजिर होऽऽऽ!!

(अजीब सी पोशाक में जादूगर का प्रवेश)

जादूगर : मेरे पास है बच्चा, इलाज है तेरी समस्या का, खा करेला कच्चा! नीम चबा और बोल सच्चा! बोल–बोल।

मरीज : (मुर्गे की बांग की तरह) सच्चाऽऽ सच्चाऽऽऽ

जादूगर : अच्छाऽऽ! अच्छाऽऽ! देखाऽऽऽ।

फौजी : इलाज करो मैजिशियन!

जादूगर : सुन बच्चा! आज से झूठ बोलने से पहले तुझे हिचकी आएगी या जबान तेजी से लड़खड़ाएगी।

मरीज : ऐसाऽऽऽ?

जादूगर : सुबह उठकर दो गिलास गुनगुना पानी पीना होगा। दस बार सूर्य नमस्कार करना होगा।

मम्मी : जैसा मैं करती हूँ ना। सूरज को पानी देते समय!

जादूगर : नहीं वो वाला नहीं! बाबा रामदेव वाला। मम्मी जी! यूटयूब देखना या गूगल सर्च करना।

आओ पढ़ें : नई किताबें

बाल साहित्य में विभिन्न विषयों पर रचित कविताओं की पुस्तकें प्रायः प्रकाशित होती है। किन्तु इस किताब में विविध रोचक पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित दस लम्बी कविताएँ है। इन पद्यकथाओं को कवि ने भाव व शिल्प की दृष्टि से बहुत ही खूबसूरत बनाया है। कथा के साथ कल्पना व सूक्ष्म वर्णन से ये रचनाएँ पठनीय एवं संग्रहणीय है। सुन्दर चित्रों से सजी इस पुस्तक की प्रत्येक कविता के अन्त में सार रूप में संदेश भी दिया गया है। त्रुटिरहित सुरुचिपूर्ण प्रकाशित यह संकलन सचमुच बालोपयोगी है।

पुस्तक का नाम : बालोपयोगी लोक पद्यकथाएँ
लेखक : सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'
मूल्य : 225 रुपये
पृष्ठ : 117
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर (राजस्थान)
संस्करण : 2021

बाल कविताएँ व गीत बच्चों को सदा ही प्रिय लगते हैं। इस पुस्तक में 27 बाल कविताएँ जिनमें विभिन्न रंग–रूप और रस है, मन करता है पढ़ते ही रहें। अधिकतर कविताएँ निक्कू–मिक्कू दो बाल पात्रों के इर्द गिर्द लिखी गई है। इनमें बच्चे की पसन्द के सभी विषय है– सूरज, आम, पकोड़े, कुल्फी, चॉकलेट, बन्दर, तोता, हाथी, मौसी, दादा, पिता, नदी, ढोलक आदि। सजिल्द पुस्तक में रंगीन चित्र दिये गये हैं जो बाल मन को सहज ही लुभाते है। कविताओं की भाषा सरल एवं समझने योग्य है। काव्य शिल्प का पूरा ध्यान रखने से रचनाएँ लयबद्ध बनी है।

पुस्तक का नाम : तोता बोला खरी–खरी
लेखक : राजकुमार निजात
मूल्य : 250 रुपये
पृष्ठ : 112
प्रकाशक : आनन्द कला मंच प्रकाशन, भिवानी
संस्करण : 2021

डॉक्टर : जय हो जादूगर की!

जादूगर : जोर–जोर से शाम–सवेरे गाना। पेट की हवा निकालना!

नर्स : अरे बाप रे! पूरे मोहल्ले की सजा।

जादूगर : और फिर जब मोहल्ला डंडा लेकर इसे दौड़ाएगा। तब आएगा मजा।

फौजी : फौजी खुश हुआ!

मम्मी : मेरे लाल! चल बहुत हुआ! याद रहेगा ना!

डॉक्टर : वरना। बच्चू कल तेरा ऑपरेशन किया जाएगा।

सहायक : मगर मेरे इस ऑक्सीजन भरने वाले पम्प का क्या होगा?

फौजी : मरीज को प्राण वायु..मतलब ऑक्सीजन भरवानी है?

मरीज : आज नहीं। बहुत हो गया! लेटे–लेटे थक गया हूँ। नाटक खत्म करते हैं।

सब : चलो, नाटक खत्म हो गया! सबक ये हैं। झूठ मत बोलना! बजाओ ताली।

समीर गांगुली
मुम्बई (महाराष्ट्र)

पत्र लेखन :

सबसे उत्तम होगा यही उपहार

प्यारे बच्चो!

कैसे हैं आप सभी? आज हम उपहार के बारे में बात करेंगे। आप सभी को उपहार लेना बहुत पसन्द होगा और आप अकसर अपने मित्रों को अलग–अलग मौकों पर उपहार देते भी होंगे। जब भी उपहार की बात की आती है, सभी के चेहरे पर मुस्कुराहट और मन में उत्सुकता छा जाती है, क्योंकि उपहार सभी को बहुत पसन्द होते हैं।

बच्चो, अभी तक आपने अपने मित्रों को कई तरह के उपहार दिए होंगे जैसे कि उनके जन्मदिन पर खिलौने या कोई अन्य वस्तु भी हो सकती है जैसे कि बॉल, पेन, गुल्लक, रंग, बैग आदि। पर आज मैं आपको ऐसे उपहार के बारे में बताऊँगी, जिन्हें आप अपने मित्रों को देंगे तो, वह आपके मित्रों को बहुत पसन्द आएगा और वह हमेशा आपकी मित्रता का साक्षी रहेगा और यह उपहार कोई खिलौना या फिर कोई निर्जीव वस्तु नहीं होगी, बल्कि यह एक जीवित उपहार होगा जो कि आपकी मित्रता को और घनिष्ठ करने का प्रयास भी करेगा।

आप अपने मित्र को उपहार के रूप में एक पौधा दे सकते हैं। पौधे जीवित होते हैं और हमारे जीवन के संरक्षक भी होते हैं। आपको पौधे को उपहार के रूप में देना शायद शुरू में साधारण लगे पर ऐसा करने से आपको बहुत से लाभ होंगे, पहला पौधे हमारे वातावरण को शुद्ध करते हैं और हमारे लिए बहुत उपयोगी होते हैं, जब आप अपने मित्र को कोई खिलौना देते हैं तो आपका मित्र आपको तब ही याद रखेगा, जब वह उस खिलौने से खेलेगा, पर जब आप उसे एक पौधा उपहार के रूप में देंगे, तो वह आपको रोज याद करेगा क्योंकि पौधे की देखभाल करते समय वह रोज पौधे को पानी भी देगा और उसे देखेगा भी।

आप अपने माता–पिता की सहायता से किसी भी तरह का पौधा चुन सकते हैं, बाजार में बहुत से पौधे उपलब्ध होते हैं, जो कि उचित दामों में खरीदे जा सकते हैं। ये देखने में बहुत ही सुन्दर होते हैं और आकर्षक भी होते हैं। इन्हें घर में आसानी से रखा जा सकता है और बहुत से पौधों से खुशबू और फूल भी आते हैं। ये घर की सुन्दरता को भी बढ़ाते हैं। ये घर में ऑक्सीजन के अच्छे स्रोत हैं।

हाँ यदि आप चाहें, तो पौधों को बाजार से खरीदने की बजाए, घर पर ही तैयार कर सकते हैं। जब आप कोई फल खाते हैं, तो उसके बीज या गुठली को उगाकर आप छोटे–छोटे पौधे तैयार कर सकते हैं। ऐसा करने में आपको अपने माता–पिता की सहायता लेनी होगी और आपका कोई खर्चा भी नहीं होगा।

पौधों को उपहार के रूप में प्रयोग करके न केवल आप अपनी मित्रता को घनिष्ठ करेंगे, बल्कि आपकी मित्रता, आपके पर्यावरण के साथ भी घनिष्ठ हो जाएगी और सिर्फ मित्रों को ही नहीं आप बड़ों के जन्मदिन या फिर किसी शुभ अवसर पर पौधों को उपहार के रूप में दे सकते हैं। ऐसा करने से आपको बहुत खुशी मिलेगी और आप देखेंगे कि पर्यावरण की रक्षा करने में भी आप अपना सहयोग दे पाएँगे। तो तैयार कीजिए अपने मित्र के लिए जन्मदिन का यह एक नया उपहार....

नेहा गुप्ता, दिल्ली

पानी की गोलियाँ

''मुझे बहुत तेज प्यास लग रही है। जल्दी से कोई पानी दो। पानी, पानी, पानी।'' पन्द्रह साल के सार्थक ने जोर–जोर से ये शब्द कहे तो सबका ध्यान उसकी ओर गया। वह अपने शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ एनसीसी के कैम्प में सोलन जा रहा था। शिक्षिका पूजा जल्दी से उठकर सार्थक के पास आई। उन्होंने बच्चों से कहा– ''जल्दी से पानी दो।''

सार्थक के साथ लक्ष्य बैठा हुआ था। उसने जल्दी से अपनी पानी की बोतल निकाली, पर यह क्या? बोतल खाली थी। उसमें पानी की एक बूँद भी न थी। यह देखकर पूजा बोली– ''जल्दी से कोई बच्चा पानी दो।'' पूजा की आवाज सुनकर सभी बच्चों ने अपने–अपने बैग से पानी की बोतल निकाली पर यह क्या किसी भी बोतल में पानी की एक बूँद न थी। यह देखकर सभी विद्यार्थी हैरानी से बोले– ''अरे बोतल तो पानी से भरी हुई थी। फिर यह क्या हुआ? पानी कहाँ चला गया? उधर सार्थक प्यास–प्यास कहते–कहते अचेत सा होता जा रहा था। शिक्षिका पूजा के साथ शिक्षक अमन भी सार्थक की हालत देखकर घबरा गए और ड्राइवर व सहायक से बोले– ''गाड़ी रोको और आसपास जहाँ भी पानी हो वहाँ से पानी लाओ।''

इस समय बस जंगल से गुजर रही थी। ड्राइवर के साथ ही सहायक भी उतरा और वे आसपास पानी ढूँढ़ने लगे। हैरत की बात यह थी कि इस समय कहीं भी पीने का पानी नजर नहीं आ रहा था। एक जगह सहायक की नजर पड़ी। वह तेजी से वहाँ गया तो पाया कि वह नाले का बदबूदार पानी थी। थके हारे से खाली हाथ लौटकर वे बस के अन्दर वापस आ गए। अब क्या हो? कहाँ से पानी का इन्तजाम हो?

अमन और पूजा कुछ सोच ही रहे थे कि तभी एक अद्भुत सा बौना बस में आया और अपने झोले से एक गोली निकाल कर बोला– ''यह सार्थक को दे दो। इससे उसकी प्यास बुझ जाएगी।'' पहले तो अमन और पूजा ने आनाकानी की लेकिन जब बौने ने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह पानी की ही गोली है तो अमन और पूजा दोनों ने एक–एक गोली को निगला। गोली को निगलते ही उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो उन्होंने अमृत जैसा जल पिया हो। सार्थक को वह गोली खिलाई। गोली निगलते ही सार्थक खड़ा हो गया और उसकी जान में जान आई।

सार्थक को सही देखकर अमन और पूजा बौने से बोले– ''इस जंगल में आप कहाँ से आ गए और यह पानी की गोली आपने कहाँ से ली? हमने तो आज तक पानी की ऐसी गोली नहीं देखी। यह तो बड़ी अद्भुत बात है। इस पर बौना मुस्कराते हुए बोला– ''देखोगे भी कैसे? यह तो हमारे सिंबो ग्रह पर बनती है। वहाँ पानी नहीं होता न। इसलिए हम पृथ्वी पर आकर यहाँ के जल से पानी की गोलियाँ बनाकर अपने ग्रह पर ले जाते हैं। आज भी मैं पानी की गोलियाँ बनाने आया था। पर देख रहा हूँ कि इस बार तो यहाँ पानी ही नहीं है। यह कैसे हो गया?

अब तो इस ब्रह्मांड के समूचे प्राणि नष्ट हो जाएँगे।'' यह सुनकर बस में उपस्थित सभी विद्यार्थी व शिक्षक चौंक गए।

पूजा ने पूछा– ''आप पानी से गोलियाँ कैसे बनाते हैं?'' बौना बोला– ''मेरा नाम सिंको है। मैं अपने ग्रह का वैज्ञानिक हूँ और पीने के पानी की गोलियाँ बनाना जानता हूँ। वैसे तो हम लोगों को पानी और भोजन की आवश्यकता नहीं होती। हम ये गोलियाँ केवल स्वाद के लिए खाते हैं। हमारा भोजन तो प्राकृतिक हवा है। ताजी और स्वच्छ हवा हमारी शक्ति का स्रोत है। लेकिन देख रहा हूँ कि इन दिनों पृथ्वी पर न ही स्वच्छ जल है और न ही स्वच्छ हवा।

अब सिंको ने सार्थक की ओर देखकर कहा– ''सार्थक भी उनमें से एक है । तुम पानी का बिलकुल भी महत्त्व नहीं समझते। अगर इसे आधा गिलास पानी पीना है तो पूरा गिलास लबालब भरता है, सुबह ब्रश करते समय नल को खुला रखता है, नहाते समय भी बहुत पानी व्यर्थ करता है। आज जब इसे वास्तव में पानी की बहुत जरूरत थी तब वह इसके पास नहीं था क्योंकि जब पानी इसके पास समुचित मात्रा में था तो तब इसने इसकी कीमत नहीं समझी। अब इसे समझ आ गया होगा कि पानी की एक बूँद भी बेहद कीमती है। वह तो मैं समय पर आ गया और इसे पानी की गोली दे दी। जिस कारण इसकी जान बच गई। वरना सार्थक पानी के अभाव में तड़प–तड़प कर जान दे देता।''

सिंको की बात सुनकर पूजा बोली– ''यह तो आप बिलकुल सही कह रहे हो।'' सिंको अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोला– ''सूरज की आग उगलती किरणों से पशु–पक्षी बेचारे पानी की तलाश में घूमते रहते हैं। गौरेया, कबूतर, तोता, कौआ जैसे पक्षी तो लोगों के घरों में भी पानी की तलाश में आते हैं। आप लोग पानी व्यर्थ में बहा देते हो लेकिन इन पक्षियों के लिए बर्तन में शीतल जल भर कर नहीं रख सकते। पृथ्वी पर पूरा संतुलन समूचे प्राणि जगत से है। इसमें मनुष्य, पशु–पक्षी, कीट–पतंगे सभी शामिल हैं। इसलिए सबका ध्यान रखना हर प्राणी का कर्त्तव्य है। यदि आप एक हरा–भरा, खुशहाल और समृद्ध जीवन चाहते हैं तो आपको प्रकृति के साथ ही हर जीव जंतु का ध्यान भी रखना अनिवार्य है।

यह सुनकर लक्ष्य बोला– ''पर हम हर प्राणि का ध्यान कैसे रख सकते हैं?'' उसकी बात सुनकर सिंको मुस्करा कर बोला– ''बहुत अच्छा प्रश्न है।' आप सभी प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करें, कूड़ा सार्वजनिक स्थल और नदियों में न फेंके, नदियों को स्वच्छ व साफ रखें और पानी का सदुपयोग करें तो हर प्राणि की स्वयं ही मदद हो जाएगी।'' सार्थक बोला– ''बिलकुल सही कहा आपने। हमें तो केवल अपनी मदद करनी है और इसी से पूरे विश्व की मदद हो जाएगी।''

''पर आप हमारी भाषा कैसे बोल रहे हैं?'' पूजा ने प्रश्न किया। ''इसलिए क्योंकि मैं मस्तिष्क की तरंगों को पढ़ना जानता हूँ। मुझे यह भी पता है कि आप में से कौन क्या सोच रहा है? आप कहें तो मैं एक–एक के बारे में बताना शुरू करूँ कि वह क्या क्या सोच रहे हैं?'' यह सुनकर सभी एक साथ बोले– ''नहीं, प्लीज नहीं।'' सबकी 'न' सुनकर सिंको मुस्करा कर बोला– ''अच्छा नहीं बताता, अब मैं अपने ग्रह पर चलता हूँ, पर हाँ इस विश्वास के साथ कि जब मैं अगली बार आऊँगा तो मुझे यहाँ पर ज्यादा पेड़–पौधे और स्वच्छ जल मिलेगा।'' बस में उपस्थित सभी लोग बोले– ''हम वादा करते हैं कि आपको अगली बार पृथ्वी पर हर ओर स्वच्छता, हरा–भरा वातावरण और ताजी हवा मिलेगी।'' लोगों के द्वारा किए गए इस वादे को सुनकर सिंको मुस्कुरा कर अपने ग्रह की ओर रवाना हो गया। पूरी बस हाथ हिलाते हुए बोली– ''हमें आपका इन्तजार रहेगा।'' धीरे–धीरे सिंको आसमान में गायब हो गया।

तभी जोर से सार्थक बोला– ''सिंको, मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा।'' यह सुनकर सार्थक की बहन संस्कृति बोली– ''भैया, कौन सिंको? उठो स्कूल नहीं जाना है क्या?'' संस्कृति की बात सुनकर सार्थक झट से उठ बैठा। वह बाथरूम की ओर बढ़ गया। जब उसने ब्रश करना आरम्भ किया तो नल बन्द कर दिया और सिंक पर लगे दर्पण में देखते हुए बोला– ''सिंको, मैं तुमसे किया हुआ वादा हर पल निभाऊँगा और स्वच्छ जल को बचाऊँगा।''

रेनू सैनी
नई दिल्ली

बूझो तो जानें

1

मकर संक्रांति के पहले दिन,
तय तिथि को आए।
मुख्य पर्व पंजाब राज्य का,
नाम और तिथि बताएँ।

5

प्रथम महिला अध्यापिका का,
पद था जिसने पाया।
कन्याओं की खातिर जिसने,
विद्यालय खुलवाया।

2

आजादी की खातिर जिसने,
अहिंसा नीति अपनाई।
वह कौन महात्मा था, किस दिन,
गोली से जान गँवाई।

3

गणतन्त्र देश का दर्जा,
भारत ने कब पाया।
किस तिथि और वर्ष में इसको,
जन-जन ने अपनाया।

4

किसके जन्म दिवस को हम सब,
राष्ट्रीय युवा दिवस मनाएँ।
दिवस-महीना और नाम भी,
उस महापुरुष का बतलाएँ।

दीनदयाल शर्मा
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

चित्र पहेली

1 से 81 तक के बिन्दुओं को अपनी पेन्सिल से क्रमवार मिलाकर जंगल के राजा का सुन्दर चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

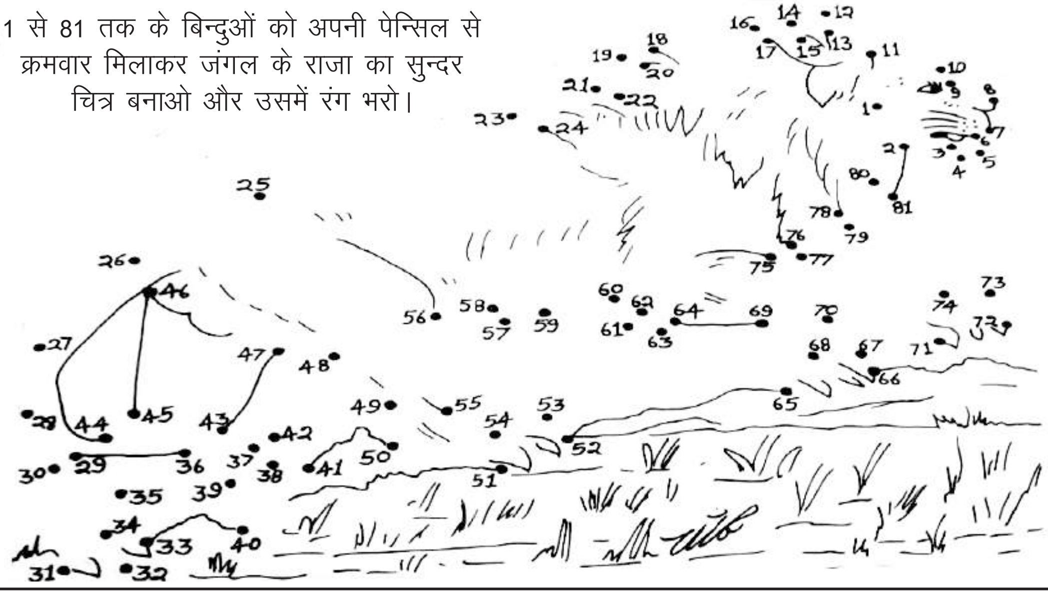

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

न रहें बेड़ी में बँधकर, खु

राष्ट्रीय बालिका दिवस
24 जनवरी

समाज में बालिकाओं के प्रति असमानताओं को मिटाने एवं लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रति वर्ष 24 जनवरी को 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' के रूप में मनाना निश्चित किया गया है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य यही है कि बालिकाओं के साथ हो रहे भेद–भाव की ओर ध्यान आकृष्ट करना है, जैसे शिक्षा में समान अधिकार नहीं, उनके आहार में, कानूनी अधिकारों में, सम्मान में असमानता है, परिवार में समानता का व्यवहार नहीं है आदि–आदि।

भारत सरकार द्वारा 24 जनवरी 2008 को बालिकाओं के लिए राष्ट्रीय दिवस के रूप में 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' मनाने की शुरूआत हुई। इसका प्रारम्भ महिला और बाल विकास मंत्रालय ने किया था। 24 जनवरी के दिन इंदिरा गांधी पहली बार प्रधानमन्त्री का पद ग्रहण किया था। इसलिए इस दिन को 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। समाज में बालिकाओं की स्थिति में सुधार एवं जीवन को बेहतर बनाने के लिये इस दिवस को मनाया जाता है। यह निर्णय राष्ट्रीय स्तर पर लिया गया है।

राजीव देर तक सोया है उससे तुझे क्या? तू उठ और मेरे काम में मदद कर।

नीतू तुझे दूसरे शहर में पढ़ने नहीं भेज सकते, जमाना बड़ा खराब है। तेरे भाई की बात कुछ और है।

सविता तू इतना महँगा मोबाइल लेकर क्या करेगी? हर बात में भाई से तुलना मत किया कर जैसे अनेक वाक्य हमें शिक्षित परिवार में भी यदा–कदा सुनने को मिल जाते हैं। यह सारे वाक्य लैंगिक भिन्नता के आधार पर हमारे पक्षपात पूर्ण व्यवहार को प्रदर्शित कर रहे हैं। प्रश्न यह है कि क्या ऐसा होना चाहिए?

समाज को पूर्णता प्रदान करना समाज का ही दायित्व है। इस पूर्णता में स्त्री–पुरुष दोनों की ही अहम भूमिका होती है। आज भी गाँव–कस्बे में बालक–बालिकाओं में भेदभाव किया जा रहा है। हालाँकि इस कुरीति का अनुपात पहले से कम हुआ है फिर भी भेदभाव हो रहा है। वैसे तो बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से एक दिन निश्चित भी किया गया है किन्तु इसके लिए एक दिन काफी नहीं, हमें पूरे 365 दिन कार्य करना होगा।

हम आए दिन बड़े–बड़े मंचों पर बालिकाओं की प्रगति और उन्हें उनके अधिकार दिलाने की बातें भाषण में सुनते हैं पर उनमें से बहुत कम बातें सार्थक सिद्ध होती हैं और अनेक बातें बस कागजों पर ही रह जाती हैं। बड़े होकर बालिका शारीरिक, मानसिक, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने इसके लिए उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा व पढ़ाई जैसी चीजों का विशेष ध्यान

...खुला आकाश चाहिए

रखना होगा ताकि एक बेहतर समाज के निर्माण में बालिकाएँ भी योगदान दे सकें।

आज की बालिका को आगे बढ़ने के लिए अनेक राहें मिल गईं हैं। वो राह चाहें खेल की हो या राजनीति की, घर–परिवार की हो या उद्योग की। सभी क्षेत्रों में बालिकाओं ने अपना परचम लहराया है। राष्ट्रमंडल खेलों के गोल्ड मैडल की बात हो या उच्च पदों पर आसीन जैसे मुख्यमन्त्री और राष्ट्रपति की बात हो सभी क्षेत्रों में बालिकाएँ समान रूप से अपनी सहभागिता दे रही हैं। इसलिए बालिकाओं के लिए सशक्त, सुरक्षित और बेहतर माहौल अति आवश्यक है।

भले ही सदियाँ बदल रही हैं फिर भी बालिकाओं की सुरक्षा पर प्रश्न चिह्न बना हुआ है। बालिकाओं को अपने अधिकारों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। उन्हें इस बात की जानकारी होनी चाहिये कि उनके पास अच्छी शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य बेहतर रखने का अधिकार है। जिसके लिए कानून भी बनाये गये हैं। चाहे उच्च शिक्षा की बात हो या घरेलू हिंसा की या दहेज और बाल विवाह जैसी कुरीतियों की बात हो। इसके लिए बने सभी कानूनों की जानकारी देश की सभी बालिकाओं को होनी चाहिए।

आज भी हम ये सुन ही लेते हैं कि लड़कियों को घर सँभालना है और लडकों को कमाने का काम करना है। इस मानसिकता को बदलना भी 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' मनाने का उद्देश्य है। समाज की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। समाज में बालिकाओं को बहन, बेटी, पत्नी या माँ के दायरों तक सीमित न रखकर खुले आकाश की ओर देखकर सपने बुनने और उन्हें पूरा करने का मौका देना चाहिए। आज के दिन हमें बालक हो या बालिका में भेदभाव नहीं करने की एवं इसके प्रति जागरूक रहने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

बालिकाओं के प्रति नजरिया एवं विचार बदलने के लिए हमें एक दिन का इन्तजार नहीं करना है बल्कि रोज इनकी शिक्षा, अधिकार और सुरक्षा पर विचार करना चाहिए। हम सब की जिम्मेदारी है कि जहाँ भी बालिकाओं के साथ भेदभाव हो रहा होगा उसे देखकर अनदेखा नहीं करेंगे। उनके अधिकारों के लिए लड़ेंगे भी और उन्हें हर क्षेत्र में बराबर का अधिकार एवं सम्मान दिलाएँगे और इसकी पहल अपने परिवार से करेंगे।

कर सकें सपनों को पूरा ये अधिकार ही तो चाहिए
न रहें बेड़ी में बँधकर खुला आकाश ही तो चाहिए
बात सीमा पर हो लड़ने की या हो घर–आँगन की
हर ओर हमको बस सम्मान ही तो चाहिए।

कीर्ति श्रीवास्तव
भोपाल (मध्यप्रदेश)

सिनेस्थेसिया

जब हमारी इन्द्रियाँ रचती है अनुभूति का अद्भुत संसार

वर्णिका संगीत सुनते समय हवा में घुमावदार रंग देखती है। स्वीटी जब कोई शब्द सुनती है तो उससे जुड़ा एक विशेष स्वाद महसूस करती है। जैसे 'क्यूरियस' सुनने पर उसे मीठे गाजर का स्वाद आता है। अंकित जब नवंबर के महीने के बारे में सोचता है तो उसे गहरा लाल रंग नजर आता है। स्वप्निल को काले अक्षर और अंक भी रंग बिरंगे नजर आते हैं। जैसे '4' उसे हमेशा गहरे भूरे रंग का नजर आता है और 'अ' लाल। रागिनी पियानो सुनते समय ब्लैकबेरी की गंध महसूस करती है।

भावना जब कभी अपने किसी मित्र को लेकर भावुक महसूस करती है तो आँखें बन्द करते ही उसे रंगों की एक दुनिया नजर आने लगती है। परिधि जब खाना खाती है तो स्वाद के साथ–साथ वह हर बाईट का ज्यामितीय आकार जैसे गोल, वर्गाकार, त्रिभुजाकार आदि भी महसूस करती है। अक्षरा जब कोई किताब पढ़ती है तो आवाजों की एक श्रृंखला सुनती है जहाँ आप हर शब्द को उससे सम्बद्ध एक विशेष आवाज से पहचान सकते हैं। जैसे अलग–अलग लोगों को आप उनकी आवाज से पहचानते हैं। अंतरा किसी और व्यक्ति के गाल पर किए गए स्पर्श को अपने गाल पर महसूस करती है।

ये सब लोग किसी और दुनिया के नहीं, हमारी ही दुनिया में रहते हैं। अन्तर केवल इतना है कि इनकी इन्द्रियों में स्वचालित और अनैच्छिक संवेदनाओं का मिश्रण होता है। जहाँ संगीत की गंध भी हो सकती है और शब्दों का स्वाद भी। सूचना जिसे किसी एक ही इन्द्रिय या मस्तिष्क के किसी एक ही हिस्से को उद्दीप्त करना चाहिए था वह एक साथ मस्तिष्क के एक से अधिक हिस्सों को उद्दीप्त कर देती है। माना जाता है कि इन लोगों में इन्द्रिय संवेदनाओं से सम्बन्धित मस्तिष्क के हिस्से क्रॉस कनेक्शन के चलते अधिक सम्बन्धित होते हैं। सह संवेदन की यह स्थिति सिनेस्थेसिया कही जाती है। हमारा मस्तिष्क इतना अद्भुत है कि इसमें होने वाले सूक्ष्म परिवर्तन हमारे लिए अनुभवों का एक नया संसार रच सकते हैं।

सिनेस्थेसिया कई प्रकार का होता है जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है। यह एक दुर्लभ स्थिति है जो पुरुषों की तुलना में महिलाओं में और लेफ्ट हैंडेड लोगों में अधिक पाई जाती है। साथ ही यह चित्रकार, लेखकों और संगीतकारों में भी अधिक देखने को मिलती है। सामान्यतः जिन लोगों को सिनेस्थेसिया का अनुभव होता है, या तो वह जन्म से ही ऐसे होते हैं या फिर जन्म के शुरूआती कुछ वर्षों में इसे विकसित कर लेते हैं। यह स्थिति आनुवंशिक रूप से पूर्व पीढ़ियों से प्राप्त भी हो सकती है। कुछ विशेष पदार्थों का सेवन करने से भी अस्थायी रूप से सिनेस्थेसिया को अनुभूत किया जा सकता है।

सिनेस्थेसिया का कोई इलाज नहीं है। कुछ लोग इस स्थिति की वजह से अलग–थलग महसूस कर सकते हैं और उन्हें अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने में परेशानी आ सकती है। ऐसे लोग अपने ही जैसे लोगों का समूह खोज कर राहत महसूस कर सकते हैं। अपने अतिरिक्त अनुभवों के सकारात्मक उपयोग को सीखने के लिए वे मनोवैज्ञानिक सलाहकार से भी विमर्श कर सकते हैं।

रचनात्मकता के क्षेत्र में कई बार यह स्थिति मदद करती है, क्योंकि आप चीजों में अधिक अच्छी तरह से सम्बन्ध कायम कर पाते हैं। सिनेस्थेसिया के साथ भी भरपूर और सामान्य जीवन जीया जा सकता है। इसे अनुभव करने वाले कई व्यक्ति प्रसिद्ध हस्तियों में भी शामिल रहे हैं।

मोनिका जैन 'पंछी'
भीलवाड़ा (राजस्थान)

दस सवाल दस जवाब

(1) इन चित्रों में प्रदर्शित नृत्य को पहचानिये।

(2) भारत के वर्तमान राष्ट्रपति कौन है?

(3) राष्ट्रीय ध्वज के अशोक चक्र में कितनी तीलिया है?

(4) वन्दे मातरम् राष्ट्रगीत की रचना किसने की?

(5) चार मीनार किस शहर में स्थित है?

उत्तर इसी अंक में

(6) अंडमान व निकोबार द्वीप समूह की राजधानी कहाँ है?

(7) राष्ट्र गान जन गण मन को गाने में कितना समय लगता है?

(8) किस राष्ट्र नायक का जन्मदिन 23 जनवरी को मनाया जाता है?

(9) 'भारत की खोज' पुस्तक के लेखक कौन थे?

(10) बाघ को राष्ट्रीय पशु का दर्जा कब दिया गया?

- मुकेश कुमार (वेटर से)– ईमानदारी और नम्रता श्रेष्ठ गुण हैं। यह बोर्ड काउंटर पर लगाने से क्या फायदा? तुम्हारा मैनेजर तो बड़ा ही बदतमीज और बेहूदा है।

  ''साहब! यह बोर्ड ग्राहकों के लिए है।'' वेटर बोला।

- दादाजी : बेटा, मैं अस्सी साल का हो गया। पर मुझे याद नहीं कि मैंने कभी झूठ बोला हो।
  ममता : इसमें आपका कसूर नहीं, बुढ़ापे में याददाश्त कमजोर हो ही जाती है।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

देशभक्ति का निर्माण न्याय और सत्य की दृढ़ चट्टान पर ही किया जा सकता है।

❖

पराजय और असफलता कभी–कभी विजय के लिए आवश्यक भी होते हैं जिससे घबराना नहीं चाहिए।

❖

पराधीन रहते हुए सुखी, सुरक्षित, आरामदेह समझना एक भ्रम की स्थिति है।

❖

अगर आपका स्वयं पर नियंत्रण नहीं है। आप अनुशासन का पालन नहीं करते तो आप जीवन के उन अधिकारों को खो बैठते हैं, जो आपके होने चाहिए थे।

लाला लाजपत राय

थर- थर काँप रहा हूँ

कब से काँप रहा हूँ थर– थर,
मम्मी दे दो स्वेटर–मफलर।

कट–कट बजते दाँत हमारे,
उठा न जाता ठंड के मारे ।

कहीं छिप गए सूरज दादा,
तेज धूप का भूले वादा।

मैडम कहती, रोज नहाओ,
मम्मी थोड़ा जल खौलाओ।

तभी स्नान मैं कर पाऊँगा,
झटपट विद्यालय जाऊँगा।

डॉ. सतीश चन्द्र भगत
बनौली, दरभंगा (बिहार)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

पापा! तुम कितने अच्छे हो

बलवन्त सातवीं कक्षा में पढ़ता था। बुरी संगत के कारण उसे चोरी करने की बुरी लत पड़ गई थी। वह मौका मिलते ही अपने साथियों के बैग से कभी पैन, कभी ज्योमैट्री बॉक्स कभी कोई कॉपी–किताब चुरा लेता। स्कूल के प्रिंसिपल के पास रोजाना उसकी शिकायते पहुँचती। प्रिंसिपल ने उसे समझाया, डाँटा, सजा भी दी किन्तु परिणाम– वही ढाक के तीन पात।

रविवार का दिन था। घर पर किसी ने कॉल बेल बजाई। बलवन्त ने दरवाजा खोला। सामने खड़ा व्यक्ति बोला– "बेटा! तुम्हारे पापा घर में है?" ''हाँ है। आपको क्या काम है?" "बेटा। उन्होंने ही मुझे फोन करके बुलाया है।'' "ठीक है। अन्दर आ जाइए।"

बलवन्त के पिता ने उस व्यक्ति से पूछा– "भाई साहब! आपका नाम क्या है?'' ''दिनेश पंत।" वह बोला। ''पर्स में क्या था?" ''पर्स में नौ हजार नकद, ड्राइविंग लाइसेंस, एटीएम कार्ड, एटीएम पिन और मेरा विजिटिंग कार्ड।'' बलवन्त के पिता को तसल्ली हो गई। वे पर्स लौटाते हुए उससे बोले– "लो सँभालो, अपना पर्स। आज सुबह यह मुझे धानमंडी में पड़ा मिला था।'' अपना पर्स वापस पाकर उस व्यक्ति का चेहरा खिल उठा। उसकी खुशी की कोई सीमा न रही।

वह बलवन्त के पिता की प्रशंसा करता रहा। बलवन्त भी पास ही बैठा था। वह सब देख–सुन रहा था। वह अपने पिता की ईमानदारी से बड़ा प्रभावित हुआ। सोचने लगा– ''अपनी खोई हुई वस्तु वापस पाकर आदमी को कितनी खुशी होती है? मैं जिनकी चीजें चुरा लेता हूँ, उनका दिल कितना दुःखी होता होगा।'' बस! यह सोचते ही उसके जीवन में एक नया मोड़ आ गया।

वार्षिक परीक्षाएँ शुरू हो गई थी। एक दिन बलवन्त पेपर देकर स्कूल से वापस घर लौट रहा था। रास्ते में उसके पीछे से एक बाइक तीव्र गति से आई और निकल गई। बाइक से अचानक एक बैग नीचे गिर गया। बाइक दूर निकल गई। बलवन्त ने वह बैग उठा लिया। उसे लेकर देखा तो पाँच–पाँच सौ रुपए की कई गड्डियाँ और कुछ कागजात थे। उसने बैग वापस बन्द कर दिया।

वह वापस स्कूल आया। उसने वह बैग प्रिंसिपल को सौंप दिया। बैग में लाखों रुपए देखकर, प्रिंसिपल बलवन्त की ईमानदारी से बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे शाबाशी दी।

बलवन्त स्कूल से वापस घर की ओर चल पड़ा। अभी वह कुछ ही दूरी पर आया था कि उसे सामने से एक बाइक आती दिखी। बाइक नजदीक आकर रुक गई। बाइक सवार घबराया हुआ था। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थी।वह बलवन्त से बोला– ''बेटा! मेरा बैग कहीं गिर गया है। तुमने देखा है क्या?'' बलवन्त ने उसे पूरी घटना कह सुनाई। सुनकर उसकी जान में जान आई। वह बाइक सवार शिक्षा विभाग में ही बड़ा अधिकारी था। वह बलवन्त की ईमानदारी से इतना खुश और प्रभावित हुआ कि उसने बलवन्त के बारे में उससे पूरी जानकारी हासिल की और एक डायरी में नोट कर ली।

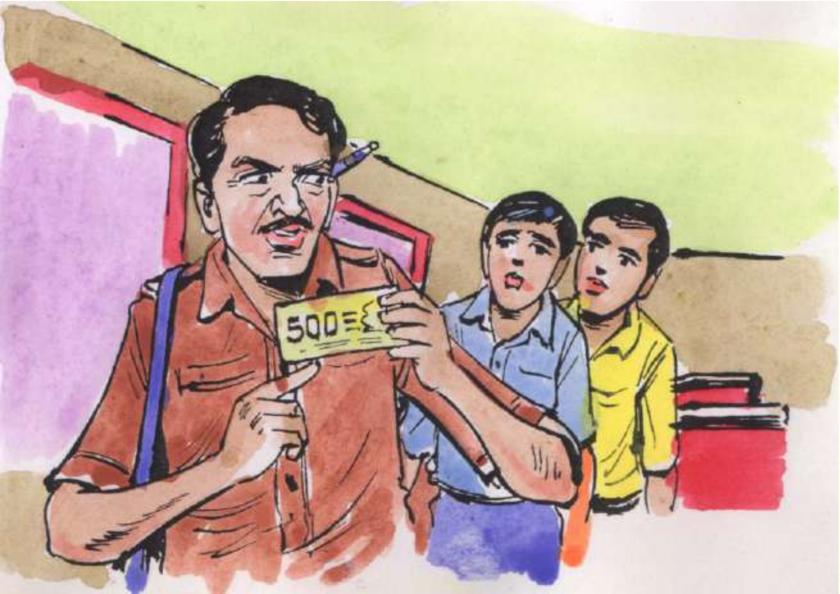

समय का चक्र अपनी गति से घूमता रहा। स्कूल में डेढ़ महीने की छुट्टियाँ हो गई। नया सत्र आया। स्कूल खुले। आज बलवन्त के स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग थी। बच्चों के अभिभावकों से स्कूल के प्रिंसिपल बोले– "बच्चों के समग्र विकास के लिए पढ़ाई के साथ–साथ उनमें नैतिक गुणों का होना भी आवश्यक है। बच्चे पुस्तकें पढ़कर अथवा उपदेश सुनकर उतना नहीं सीखते, जितना सामने हो रहे व्यवहार से सीखते हैं क्योंकि बच्चों में अनुकरण की प्रवृत्ति होती है। यदि आप बच्चों के समक्ष शुद्ध आचरण पेश करेंगे तो निश्चय ही वे आपका अनुकरण कर सद्‌गुण ग्रहण करेंगे।"

प्रिंसिपल ने आगे कहा– "इस बात का प्रमाण है इस सत्र से लागू पाँचवी की हिन्दी की यह पाठ्य–पुस्तक। जिसमें इसी विद्यालय के छात्र बलवन्त की ईमानदारी की एक कहानी 'ईमानदार बलवन्त' शीर्षक से पाठ्यक्रम में शामिल हुई है। इसमें यही बताया गया है कि किस तरह बलवन्त ने अपने पिता से ईमानदारी का पाठ पढ़ा जिससे उसके कोमल हृदय पर ईमानदारी की अमिट छाप पड़ गई।" सभी अभिभावक बलवन्त के पिता की ओर देखने लगे। उनकी आँखों से अश्रु टपक रहे थे। जो यही कह रहे थे– ''हाँ, माँ–बाप ही औलाद के भविष्य की बुनियाद होते हैं।

राजेश अरोड़ा
गजसिंहपुर (राजस्थान)

रंग भर कर देखो

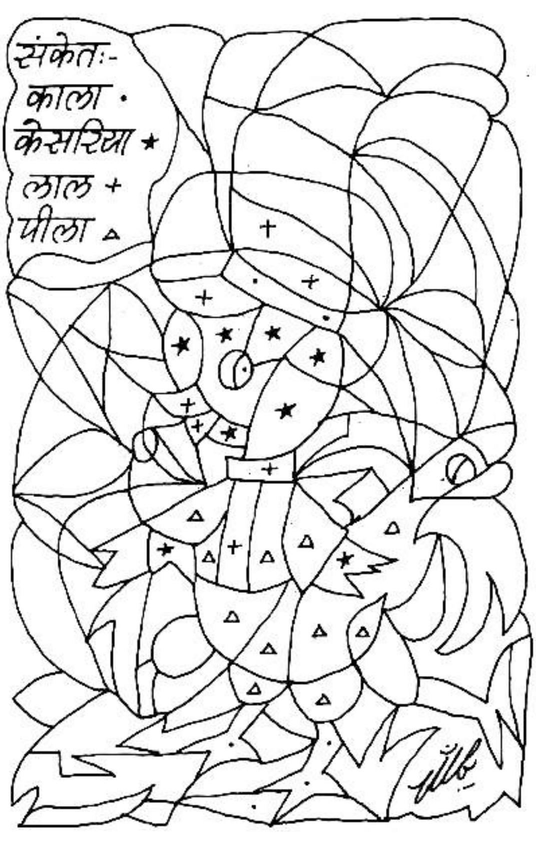

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

	3	9	2		8	7	1	5
6		8			1			
	5		9	3		8	4	6
7		4		1			5	8
8	1		6	4		3	7	
	2		8		5	1		4
5		3		9			2	1
	4	1	5		3			7
9			1	2		5	8	

उत्तर इसी अंक में

श्रद्धा सुमन

विगत कई वर्षों से बच्चों का देश में कहानियों के चित्र, किड्स कॉर्नर, चित्रकथा एवं आवरण के सुंदर आकर्षक चित्र बनाने वाले कलाकार श्री वेणु वरियाथ, अलुवा (केरल) का गत 23 नवंबर 2022 को आकस्मिक देहान्त हो गया. बच्चों का देश परिवार उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता है.

व्हाट्सएप कहानी

'प्रिंस' पिताजी जोर से चिल्लाते हैं। प्रिंस दौड़कर आता है और पूछता है– ''क्या बात है पिताजी?'' पिताजी– ''तुझे पता नहीं है, आज तेरी बहन रश्मि आ रही है? वह इस बार हम सभी के साथ अपना जन्मदिन मनायेगी। अब जल्दी से जा और अपनी बहन को लेकर आ। हाँ और सुन तू अपनी नई गाड़ी लेकर जाना जो तूने कल खरीदी है। उसे अच्छा लगेगा।'' प्रिंस– ''लेकिन मेरी गाड़ी तो मेरा दोस्त ले गया है सुबह ही और आपकी गाड़ी भी ड्राइवर ये कहकर ले गया कि गाड़ी की ब्रेक चेक करवानी है।''

पिताजी– ''ठीक है तो तू स्टेशन तो जा, किसी की गाड़ी माँगकर या टैक्सी करके ? उसे बहुत खुशी मिलेगी।'' प्रिंस– ''अरे वह बच्ची है क्या, जो आ नहीं सकेगी? टैक्सी या ऑटो लेकर आ जायेगी।'' पिताजी– ''तुझे शर्म नहीं आती ऐसा बोलते हुए? घर में गाड़ियाँ होते हुए भी घर की बेटी किसी टैक्सी या ऑटो से आयेगी?'' प्रिंस– ''ठीक है आप जाओ मुझे बहुत काम है, मैं नहीं जा सकता।''

पिताजी– ''तूझे अपनी बहन की थोड़ी भी फिकर नहीं? शादी हो गई तो क्या बहन परायी हो गई। क्या उसे हम सबका प्यार पाने का हक नहीं? तेरा जितना अधिकार है इस घर में उतना ही तेरी बहन का भी है।'' प्रिंस– ''मगर मेरे लिए वह परायी हो चुकी है और इस घर पर सिर्फ मेरा अधिकार है।'' तड़ाक... अचानक पिताजी का हाथ उठ जाता है प्रिंस पर और तभी माँ भी आ जाती है।

मम्मी– ''आप कुछ शरम तो कीजिये ऐसे जवान बेटे पर हाथ नहीं उठाते।'' पिताजी– ''तुमने सुना नहीं इसने क्या कहा? अपनी बहन को पराया कहता है। ये वही बहन है जो इससे एक पल भी जुदा नहीं होती थी हर पल इसका खयाल रखती थी। पॉकेट मनी से भी बचाकर इसके लिए कुछ न कुछ खरीद देती थी। विदाई के वक्त भी हमसे ज्यादा अपने भाई से गले लगकर रोई थी और ये आज उसी बहन को पराया कहता है।'' प्रिंस– (मुस्कुरा के) ''बुआ का भी तो आज ही जन्मदिन है पापा। वह कई बार इस घर में आई है मगर हर बार ऑटो से आई है। आपने कभी भी अपनी गाड़ी लेकर उन्हें लेने नहीं गये। माना वह आज तंगी में है मगर कल वह भी बहुत अमीर थी। उन्होंने दिल खोलकर हमें सहायता और सहयोग किया है। बुआ भी इसी घर से विदा हुई थी फिर रश्मि दी और बुआ में फर्क कैसा? रश्मि मेरी बहन है तो बुआ भी तो आपकी बहन है।''

तभी बाहर गाड़ी रुकने की आवाज आती है। तब तक पापा प्रिंस की बातों से पश्चाताप की आग में जलकर रोने लगे और इधर रश्मि भी दौड़कर पापा मम्मी से गले मिलती है। लेकिन उनकी हालत देखकर पूछती है कि– ''क्या हुआ पापा?'' पापा– ''तेरा भाई आज मेरा भी पापा बन गया है।'' रश्मि भाई की तरफ देखते हुए– ''ऐ पागल! नई गाड़ी न? बहुत ही अच्छी है। मैं ड्राइवर को पीछे बिठाकर खुद चलाकर आई हूँ और कलर भी मेरी पसन्द का है।'' प्रिंस– ''happy birthday to you दी। वह गाड़ी आपकी है और हमारे तरफ से आपको birthday gift।'' बहन सुनते ही खुशी से उछल पड़ती है।

तभी बुआ भी अन्दर आती है। बुआ– ''क्या भैया आप भी न? न कोई फोन, न कोई खबर अचानक भेज दी गाड़ी। भागकर आई हूँ खुशी से। ऐसा लगा जैसे पापा आज भी जिन्दा हैं। इधर पिताजी अपनी पलकों में आँसू लिये प्रिंस की ओर देखते हैं और प्रिंस पापा को चुप रहने को इशारा करता है। इधर बुआ कहती जाती है कि– ''मैं कितनी भाग्यशाली हूँ कि मुझे पिता जैसा भैया मिला, ईश्वर करे मुझे हर जन्म में आप ही भैया मिले।'' पापा मम्मी को पता चल गया था कि ये सब प्रिंस की योजना है। आज फिर एक बार रिश्तों को मजबूती से जुड़ते देखकर वह अन्दर से खुशी से रोने लगे।

बेटी और प्रकृति का सम्मान बढ़ा गाँव का मान

नन्हे दोस्तो! हमारा देश गाँवों में बसता है, जहाँ कुछ गाँव अनूठे और विशेष हैं। उनमें एक ऐसा भी गाँव है जहाँ पेड़ों को राखी बाँधी जाती है और बेटी का जन्म होने पर खुशियाँ मनाते हुए 111 पौधे लगाए जाते हैं यानी बेटी और प्रकृति दोनों का सम्मान किया जाता है।

कई मामलों में अनूठा पिपलांत्री

करीब 5 हजार की आबादी वाला राजस्थान के राजसमंद जिले का पिपलांत्री गाँव जल संरक्षण, वृक्षारोपण, ग्राम स्वच्छता जैसे अनेक क्षेत्रों में भी अनूठे कार्य करके विश्व स्तर पर प्रसिद्ध और पुरस्कृत हो चुका है। यह गाँव बेहतरीन व्यवस्था, सामाजिक सहभागिता और प्रकृति के प्रति मनुष्य के उत्तरदायित्व के मामलों में देश के अन्य गाँवों के लिए एक मिसाल बन चुका है। पिपलांत्री को आदर्श ग्राम, निर्मल गाँव, पर्यटन ग्राम, जल ग्राम, वृक्ष ग्राम, कन्या ग्राम जैसी विविध उपमाओं से जाना जाता है।

इस गाँव में बदलाव 2005 के बाद से शुरू हुआ जब श्याम सुन्दर पालीवाल यहाँ के सरपंच बने। मार्बल पत्थर खनन का क्षेत्र होने से यहाँ की पहाड़ियों का अंधाधुंध खनन होता था। इससे गाँव की प्राकृतिक सुन्दरता नष्ट हो रही थी। ऐसे में सरपंच जी ने पहाड़ियों को हरा–भरा करने का संकल्प लिया। आज 17 साल बाद उसी संकल्प का परिणाम है कि पिपलांत्री की सूरत बदल चुकी है।

जल संरक्षण और पौधारोपण

गाँव में पहाड़ी नालों के कारण उपजाऊ मिट्टी के कटाव की समस्या थी। सरपंच ने ग्रामीणों को साथ लेकर वाटरशैड योजना को सही ढंग से लागू किया, जिससे इस कटाव और जल के व्यर्थ बहाव को रोकने में मदद मिली। जिससे भूमिगत पानी के स्तर में सुधार हुआ। साथ ही उन्होंने एक अनूठा सामाजिक आन्दोलन शुरू किया जिसके तहत किसी घर में बेटी के जन्म लेने पर 111 पौधे रोपने की परम्परा शुरू

देखें पृष्ठ 36...

एक बहुत बड़ा जंगल था। जंगल में बड़े–बड़े पेड़ थे। उन्हीं पेड़ों की आड़ में अपनी–अपनी घूरी बनाकर लोमड़ियों के दो परिवार रहते थे। जिनमें एक परिवार में अकेली लोमड़ी जिसका नाम नकारा था तथा दूसरी में दूसरी लोमड़ी जिसका नाम सकारा था जो अपने पति लोमड़ के साथ रहती थी। जिनके हाल ही में दो सुन्दर और प्यारे बच्चे हुए हैं। जिनकी देखभाल और रखवाली के लिए कभी माँ सकारा वहाँ रुकती है तो पिता घने जंगल में जाकर उनके खाने–पीने की व्यवस्था करता है तो कभी पिता उनकी रखवाली करता है और माँ शिकार करके भोजन की व्यवस्था करती है।

एक दिन उन्होंने अपनी पड़ोसन नकारा से अनुरोध किया– ''बहन, बच्चों की देखभाल के लिए हम में से किसी एक को इनके पास रुकना पड़ता है और दूसरे को जंगल में शिकार के लिए जाना पड़ता है। जिसकी वजह से एक अकेले को बहुत मेहनत करनी पड़ती है। तब कहीं जाकर हम चारों का पेट भर पाता है। दिन में कुछ घंटों के लिए यदि तुम बच्चों की रखवाली का काम कर लो तो हम दोनों जा सकते हैं

और यदि शिकार अधिक मिल गया तो उसमें से कुछ हिस्सा हम तुम्हें भी दे सकते हैं।''

तब उसने जो जवाब दिया उसे सुनकर सकारा आश्चर्य चकित रह गई। उसने कहा– ''माफ करना सकारा बहन, मैं बच्चों की देखभाल जैसे फालतू लफड़े में नहीं पड़ती। तुम जानो, तुम्हारे बच्चे जाने और तुम्हारा शिकार जाने।'' इतना कहकर झट से मुड़कर वह अपनी घूरी में जाकर सो गई।

इसके पाँच–सात दिन बाद ही नकारा के पाँव में बबूल का एक लम्बा–सा काँटा चुभ गया जो बाहर निकल तो गया, मगर वहाँ गहरा घाव हो गया। जिसके कारण नकारा शिकार करना तो दूर चलने–फिरने में ही असमर्थ हो गई तो एक दिन रोते–बिलखते वह सकारा के पास आई और उससे अनुनयपूर्वक कहने लगी– ''बहन सकारा, मैं तुझे मदद करने से इनकार करके बहुत शर्मिन्दा हूँ। पाँव में घाव की वजह से पीड़ा के कारण शिकार करने में असमर्थ होने पर दो दिन से भूखी हूँ। आज मैं तेरे बच्चों को देखती हूँ और तुम जाओ अपना भी पेट भर कर आना और लौटते समय मेरे लिए भी भोजन की व्यवस्था करती आना। भूख से मेरा दम निकला जा रहा है।''

अब सकारा और उसका पति बच्चों को नकारा को सौंपकर जंगल में जाते, अपना पेट भरते और लौटते समय अपने साथ नकारा तथा अपने बच्चों के लिए भोजन लेकर आते। यह व्यवस्था पाँच–सात दिन ही चली थी कि एक दिन अचानक नकारा सवेरे–सवेरे सकारा की घूरी के आगे आकर कहने लगी– ''सकारा, तुम तुम्हारे बच्चों को सँभालो। तुमने बच्चे कोई मेरे भरोसे तो पैदा किए नहीं जो मैं इन्हे सँभालती रहूँ। अब मेरा पाँव एकदम ठीक है। मैं खुद जंगल में जाकर शिकार करके ताजा भोजन पाऊँगी। यह ठंडा, बासी, स्वादहीन और बचा–कुचा खाना न तो मैंने कभी जिन्दगी में खाया है और न ही अब खाऊँगी।''

यह सुनकर सकारा फिर अवाक् रह गई और वह करती भी क्या? उसने कहा– ''ठीक है दीदी, जैसी तुम्हारी इच्छा। ऐसा करने से हम दोनों ही परिवारों का भला था।'' कहकर वह निराश हो अपनी घूरी में लौट आई और फिर से

पति–पत्नी पहले की तरह बारी–बारी भोजन की तलाश में सघन जंगल में जाने लगे।

इस बात को तीन ही दिन बीते थे कि नकारा सवेरे–सवेरे रोती, बिलखती, कराहती, आँसू ढलकाती और हाय मैं मरी, हाय मैं मरी! कहती हुई सकारा के दरवाजे पर आ खड़ी हुई और कहने लगी– ''मेरी बहन, कल कुछ शिकारी कुत्ते मेरे पीछे पड़ गए थे। मैंने भी जान बचाने केलिए जो दौड़ लगाई तो घूरी में आकर ही ठहरी। जान बची तो लाखों पाए, परन्तु पाँव का घाव फिर से हरा हो गया। ओय मैं मरी! मुआ यह घाव तो मेरे प्राण लेकर ही छोड़ेगा।''

''बहन, आज फिर मैं भोजन के लिए वन में नहीं जा पाऊँगी। तुम, तुम्हारे बच्चे मेरे भरोसे छोड़कर वन में जाओ, अपना भी पेट भरो, अपने बच्चों के लिए ताजा भोजन और मेरे लिए सड़ा, गला, बासी, बचा–कुचा जो भी मिल जाए लेती आना। बहन, काँटे की पीड़ा और पेट की भूख बड़ी खतरनाक होती है। सखी, जल्दी आना। इन दोनों की वजह से कहीं मेरे प्राण ही न निकल जाए।''

तब सकारा ने उसे जवाब दिया– ''बहन नकारा, जहाँ तक बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था करने की बात है, इसके लिए हम पति–पत्नी जिम्मेदार हैं। हमने हमारे बच्चों को जन्म किसी दूसरे के भरोसे नहीं दिया है। जहाँ तक तेरी भूख का सवाल है, तुम हमारी पड़ोसन हो। हम तुझे भूखों नहीं मरने देंगे। हम भर पेट खाएँ और तुम भूखी रहो ऐसा कभी हो नहीं सकता, परन्तु अफसोस तो इस बात का है कि प्राणी को इतना स्वार्थी नहीं होना चाहिए। इस पृथ्वी पर हरेक प्राणी एक दूसरे के काम आता है। ऐसा स्वार्थ तो मनुष्यों में पाया जाता है। जानवरों में यह अवगुण मैंने पहली बार देखा है। जाओ दीदी, तुम अब भी सुधर जाओ जो तुमने स्वार्थ का मार्ग पकड़ा है, वह कदापि उचित नहीं। कहते हैं कि जब जागो तभी सवेरा।''

''अरे हाँ, मुझे माफ करना। पहले से ही बहुत देर हो गई है। मेरे पति जंगल से लौट आए हैं। मैं तुम्हारे लिए भोजन की व्यवस्था के लिए जंगल में जा रही हूँ।'' यह कहकर सकारा चल पड़ी

माणक तुलसीराम गौड़
बेंगलुरु (कर्नाटक)

'बेटी और प्रकृति का सम्मान....' पृष्ठ 34 का शेष....

हुई। इतना ही नहीं जब किसी घर में किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है तो उसकी स्मृति में भी 11 पेड़ लगाने की यहाँ परम्परा है। इससे वृक्षारोपण का कार्य द्रुतगति से होने लगा। इसी का परिणाम है कि गाँव में अब तक 3 लाख से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं।

बेटियों को आर्थिक संबल और पेड़ों को सामाजिक सुरक्षा

यहाँ बेटियों के नाम पर 18–20 साल के लिए 21 हजार की बैंक में एफडी भी करवाई जाती है। योजना के अनुसार बेटियों के जन्म पर लगाए पेड़ों से होने वाली आय से लड़की की शादी की जाएगी। इसके अलावा पिपलांत्री में रक्षाबन्धन के त्योहार पर गाँव की बेटियाँ अपने भाई के अलावा यहाँ के पेड़ों को भी राखी बाँधती हैं। राखी से एक दिन पूर्व बड़ा आयोजन किया जाता है। इससे पेड़ों के साथ लोगों का भावनात्मक लगाव बढ़ता है और इनके संरक्षण की प्रेरणा मिलती है।

सफाई अभियान में भी अव्वल

पद्मश्री से सम्मानित पूर्व सरपंच श्याम सुंदर बताते हैं कि उन्होंने स्वच्छता को लेकर भी जागरूकता लाने का निश्चय किया। इसके लिए खुद ही झाड़ू लेकर सफाई करनी शुरू की। उनकी देखा–देखी गाँव के अन्य लोग भी साफ–सफाई में आगे आने लगे और गाँव में इतनी साफ–सफाई रहने लगी कि 2007 में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने 'निर्मल पंचायत सम्मान' से नवाजा। यह गाँव 2008 के गणतन्त्र दिवस पर 'राष्ट्रीय पुरस्कार' सहित अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे खुद यहाँ आकर इस गाँव की तारीफ कर चुके हैं।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

समस्या का समाधान

कानपुर के ग्राम रायपुर में श्रीनारायण रहते थे। अनेक गाँवों के लोग उनसे अपनी जटिल समस्याओं के समाधान के लिए आया करते थे। श्रीनारायण के नाम की बड़ी ख्याति फैली हुई थी।

एक दिन की बात, रामसारी गाँव के कुछ लोग अपनी समस्या सुलझाने रायपुर आए। वे गाँव में पहली बार आए थे। उन लोगों ने श्रीनारायण का घर नहीं देखा था। अतः गाँव के निकट पहुँचकर उन्होंने उनके स्थान सम्बन्धी जानकारी शुरू कर दी।

रास्ते में एक खेत पर चार लोग खेत जोत रहे थे। उन लोगों ने उनसे श्रीनारायण का घर पूछा और उनके बारे में जानकारी चाही। उन खेत जोतने वालों ने कहा– "उनका घर तो नीम के सामने है, पर वे कुछ समझते सुनते नहीं हैं।" आगन्तुक लोग आश्चर्य में पड़ गए कि यदि सुनते–समझते ही नहीं, तो कठिनाई को कैसे सुलझाएँगे? लेकिन उन लोगों ने उनके पास तक जाना ही उचित समझा।

कुछ दूर चलने पर एक बड़े कुएँ पर चार महिलाएँ पानी भर रही थी। उनसे श्रीनारायण जी के बारे में पूछा। उन्होंने कहा– "उन्हें तो कुछ दिखाई ही नहीं देता, आपका वहाँ जाना बेकार होगा।" लेकिन उन लोगों ने आश्चर्य के साथ श्रीनारायण के घर जाना जारी रखा। जब उनका घर निकट आ गया तो एक दरवाजे पर एक बुढ़िया ने कहा– "अरे वह तो भगवान् के घर चले गए, जाकर क्या करोगे?" अब आगन्तुकों का आश्चर्य और भी बढ़ा, वे निरन्तर आगे बढ़ते रहे।

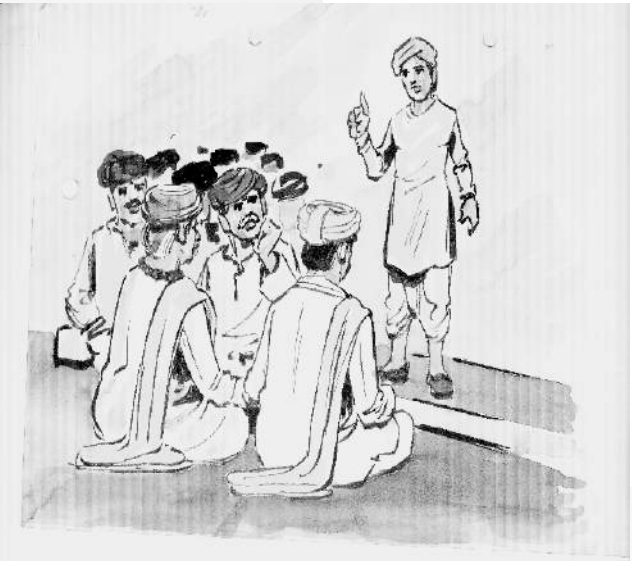

श्रीनारायण जी भली तरह से अपनी खटिया पर बैठे हुए थे। उन्होंने आगन्तुक अतिथियों से भली प्रकार कुशलक्षेम पूछा, उनका सत्कार किया, फिर आने का कारण पूछा।

आने वाले आगन्तुकों ने अपनी बात कहने से पहले उनके बारे में रास्ते में जो कहा गया, उसका पूरा विवरण बताया और पूछा कि– "लोग आपके बारे में इस प्रकार की बातें क्यों करते हैं?"

श्रीनारायण जी मुस्कुराए और कहा– "मेरा परिवार बड़ा है। उसमें अनेक प्रकार के लोग हैं। सभी अपनी–अपनी माँगे बढ़–चढ़कर रखते हैं। कोई अनुशासन और परामर्श पर ध्यान नहीं देता। ऐसी स्थिति में उनको रूष्ट होना भी स्वाभाविक है। जो आपको रास्ते में चार हलवाहे मिले थे, वे मेरे बेटे हैं, वे काम से जी चुराते हैं, और परस्पर लड़ते रहते हैं। कुएँ पर जो चार महिलाएँ मिली थी, वे चारों बेटों की पत्नियाँ हैं। वे अपने कपड़े जेवर और मायके जाने को रोज लड़ा करती हैं। मैं उनकी बातों पर ध्यान नहीं देता। जो आपको बुढ़िया मिली थी, वह मेरी पत्नी हैं। वह आये दिन तीर्थ यात्रा पर जाने की जिद और घर के झंझट छोड़ने की बात कहती है, उससे भी मैं कोई मतलब नहीं रखता।

आने वाले लोगों ने समझा समस्या सभी के परिवार में है पर उसका समाधान क्रोध में आकर तुरन्त करने की बात नहीं सोची जा सकती है। सहनशीलता, धैर्य और दूरदर्शिता रखकर ही उन्हें समय के अनुसार पूरा किया जा सकता है। उनकी बात को समझ लेने के बाद उन्होंने स्वयं की घरेलू समस्याएँ इसी आधार पर निपटाने का निश्चय कर लिया।

डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

FIFA WORLD CUP Qatar2022

लियोनेस मैस्सी का सपना पूरा हुआ

गोल...गोल..., बोले तो फुटबॉल। एक ऐसा खेल, जो पूरी दुनिया में खेला और देखा जाता है। सबसे ज्यादा खिलाड़ी इसी खेल के हैं। सबसे ज्यादा क्लब इसी खेल से सम्बन्धित हैं। खेलने के लिए भी केवल एक बॉल चाहिए। फिर जहाँ चाहे, शुरू हो जाओ, चाहे जूते हों या न हो। शायद सबसे सस्ता खेल है यह और इसीलिए यह हर किसी का हो पाया।

ऐसे हुई शुरूआत... तीसरी सदी में एक चाइनीज पुस्तक में एक ऐसे खेल का वर्णन मिलता है, जिसे सुजू कहते थे। इसका अर्थ है किक बॉल। इसमें एक चमड़े की गेंद को किक मारी जाती थी।

इंग्लैंड से यह खेल पूरे विश्व में फैला। खासकर दक्षिण अमेरिका में इस खेल ने जड़ें जमाईं। इन्हीं दिनों ब्रिटिश लोग जो अर्जेंटीना में काम करते थे, उन्होंने फुटबाल के खेल को वहाँ शुरू किया। इस तरह 1850 से 1900 तक पूरे अमेरिकी महाद्वीप में इस खेल ने अपनी जड़ें जमाईं। 19वीं शताब्दी में फुटबॉल का खेल पूरे यूरोप मे बड़ी तेजी से फैला।

फीफा का गठन – पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँधकर इस खेल के सहारे निकट लाने का काम किया फुटबॉल के विश्व कप ने। 21 मई 1904 को पेरिस में फुटबॉल की संचालक संस्था फीफा का गठन किया किया गया। उसी के प्रयासों से 1930 में उरुग्वे पहला विश्व कप फुटबॉल का आयोजन हुआ। परेशानियों के कारण इसमें केवल 13 टीमों ने भाग लिया। पर आज हालत यह है कि फीफा के सदस्य देशों की संख्या 208 है जो संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों से 16 ज्यादा हैं।

विश्व कप कतर 2022– कतर में 20 नवंबर से 18 दिसम्बर 2022 तक हुए विश्व कप में कुल 32 टीमों ने भाग लिया। इन्हें 8 ग्रुप में बाँटा गया। प्रत्येक ग्रुप के दो सर्वश्रेष्ठ टीमें राउंड ऑफ 16 में पहुँचे यहाँ से नॉकआउट गेम शुरू हुए।

पहले क्वार्टर फाइनल में क्रोशिया ने ब्राज़ील को हरा दिया, तो नीदरलैंड्स और अर्जेंटीना का मुकाबला पेनल्टी के द्वारा तय हुआ और अर्जेंटीना की टीम सेमीफाइनल में पहुँची। मोरक्को की टीम ने पुर्तगाल को हैरान करते हुए सेमीफाइनल में पहुँचने वाली पहली अफ्रीकन टीम बनी। वहीं अन्तिम क्वार्टर फाइनल मुकाबले में फ्रांस ने इंग्लैंड को हराया।

सेमी फाइनल में अर्जेंटीना का मुकाबला क्रोशिया से हुआ जिसे उन्होंने आसानी से हरा दिया। दूसरे सेमीफाइनल में फ्रांस की टीम इंग्लैंड को हराने में सफल रही।

18 दिसंबर 2022 को फाइनल मुकाबला खेला गया। निर्धारित समय तक अर्जेंटीना और फ्रांस दोनों टीमें 3–3 गोल करके बराबर रहे। मैच अतिरिक्त समय में पहुँचा और अतिरिक्त समय में भी दोनों टीमों ने एक–एक गोल किया। इस तरह से विजेता के फैसला के लिए पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया, जिसमें अर्जेंटीना ने 4–2 से जीत हासिल की।

1986 के बाद अर्जेंटीना के लिए यह पहला खिताब है। और कुल मिलाकर अब वह तीन बार विश्व विजेता बन चुकी है। अर्जेंटीना के कप्तान मैस्सी का यह पाँचवा विश्वकप था। इससे पहले वह 2014 का फाइनल हार चुके थे परन्तु इस बार उनका सपना पूरा हुआ और वह विश्व चैंम्पियन बनने में सफल रहे। मेसी ने सात गोल किए।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का गोल्डन बॉल अवार्ड लियोनेल मेस्सी को मिला। गोल्डन बूट अवार्ड सर्वाधिक गोल करने के लिए फ्रांस के काइलियन एम्बाप्पे को दिया गया। अर्जेंटीना के गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज को सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर का पुरस्कार मिला। वहीं फीफा के सर्वश्रेष्ठ युवा खिलाड़ी का खिताब अर्जेंटीना के एनिजओ फर्नांडिस को मिला। अब अगला विश्वकप उत्तरी अमेरिका में तीन देशों कनाडा मैक्सिको यूनाइटेड स्टेट्स में 2026 में खेला जाएगा।

नन्दू की सलाह

नन्दू छठी क्लास में शहर के स्कूल में पढ़ता था। इस बार गर्मियों की छुट्टी में अपनी दादी के पास गाँव आया हुआ था। वहाँ का वातावरण व रहन सहन देखकर उसमें खो सा गया। खेत खलिहानों में घूमने में उसे बहुत मजा आ रहा था। रोज सवेरे–सवेरे ही खेतों की ओर निकल जाता और किसानों को खेती करते बहुत गौर से देखता।

किसान कितनी मेहनत से अन्न उपजाते हैं। पहले खेत में हल जोतते हैं। बीज डालते हैं। समय से पानी डालते हैं। फिर फसल तैयार होने का इंतजार करते हैं। वही फसल तैयार होकर अन्न के रूप में हमारे पास आता है और उसे खाकर हम अपनी भूख मिटाते हैं।

इधर बिना बताए घर से निकल जाने के कारण दादी बहुत परेशान थी। खोजने निकल पड़ती। उसे लाख समझाती– ''नन्दू ये गाँव है, यहाँ डायनें रहती हैं जो बच्चों को टोना टोटका करने में माहिर होती हैं। बेमतलब कहीं बाहर मत निकला करो। कुछ हो गया तो मैं तुम्हारे बापू को क्या जवाब दूँगी?''

नन्दू डायन के बारे में नया–नया सुन रहा था। रात को सोते समय दादी से पूछने लगा– ''दादी डायन क्या होता है और बच्चों से उसकी क्या दुश्मनी है?'' दादी गम्भीर हो गयी। बोली– ''बेटा, डायन बहुत ही कुरूप और बड़े–बड़े दाँतों वाली राक्षस जैसी होती है। उसके लम्बे–लम्बे हाथ पाँव में बड़े–बड़े नाखून होते हैं। वह बच्चों को पकड़ लेती हैं और मार के खा जाती है।'' ''दादी डायन कैसे सबके सामने बच्चों को पकड़ेगी और मार कर खायेगी? उसके माता–पिता उसे देखते ही पकड़कर पुलिस के हवाले नहीं कर देंगे! शहर में तो पुलिस चोरों को पकड़कर जेल में ठूँस देती है और इतना मारती है कि आइंदा से वह चोरी करना ही छोड़ दे। तुम भी न दादी.. झूठमूठ का डराती हो।'' नन्दू ने इसरार किया।

''अरे, पहले वह जिस बच्चे का शिकार करना चाहती है उसे सबसे पहले अपने जादू से बीमार कर देती है। गाँव के ओझा गुणी कितना भी झाड़ फूँक कर ले मगर वह जल्दी ठीक ही नहीं होता। मैं इसीलिए तुझे बाहर निकलने से मना करती हूँ।'' वह उसकी बलैया लेने लगी। ''तुम भी न! डायन वायन कुछ नहीं होती, यह सब तुम्हारे मन का वहम है समझी।'' नन्दू ने अक्लमंदी दर्शायी।

''नहीं रे नंदूआ अब देखो ना, रामआसरे का छोटका बेटा कितने दिनों से बीमार पड़ा हुआ है। दिनभर उघारे निघारे गरम दुपहरिया में खेलता रहता था। पता नहीं किस डायन की नजर पड़ गयी जो ठीक ही नहीं हो रहा है। रामआसरे झाड़ फूँक कराते–कराते थक गया है। अब वह देवी–देवताओं के चौखट पर जाकर बेटे को जल्दी ठीक होने की मनौती मान रहा है लेकिन बच्चा है कि ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा।'' दादी के चेहरे पर चिन्ता की लकीरें खींच गई थी।

''अच्छा दादी, तुम सबसे पहले एक बात बताओ?''
''बोलो बचवा।'

''रामआसरे चाचा अपने बेटे को एक बार भी अस्पताल में डाक्टर के पास दिखाने ले गये?'' नन्दू ने तपाक से पूछा। दादी नन्दू का मुँह देखने लगी और 'ना' में मुंडी हिलायी। ''तब तुम कैसे कह रही हो उसे डायन ने बीमार किया हुआ है। क्या बीमार आदमी झाड़ने फूँकने से ठीक होगा? उसे तो डाक्टर के पास ले जाना चाहिए।''

''बेटा, रामआसरे गरीब और अनपढ़ है। वह उतने बड़े आदमी के पास कैसे जाएगा और क्या बोलेगा?'' ''बोलना क्या है दादी, जाकर सीधे बच्चे को दिखाना है। डाक्टर आला लगाकर उसकी नब्ज चेक करेगा। क्यों उसे बुखार उतर नहीं रहा है। फिर दवा देगा। दवा खाते ही बच्चा ठीक हो जाएगा और फिर से खेलने लगेगा।'' नन्दू ने समझाया।

''दादी, ओझा लोग डायन वायन का डर दिखाकर गाँव वालों को ठगते हैं। वे कभी डाक्टर के पास ले जाने को नहीं कहेंगे। इससे उनकी रोजी रोटी बन्द हो जाएगी। तुम रामआसरे चाचा को कहो वे बच्चे को डाक्टर के पास लेकर चलें। मैं भी उनके साथ चलूँगा और तुम भी चलो। देखना दवा खाते ही वह कैसे ठीक होता है।'' नन्दू ने विश्वास के साथ कहा।

''ठीक है नन्दू, कल सुबह ही रामआसरे के बच्चे को लेकर हम लोग डाक्टर के पास चलेंगे।'' दादी को नन्दू की बात जंच गयी। वह देर तक टोना टोटका, डायन, झाड़ फूँक, ओझा गुणी पर बोलती रही। नन्दू पता नहीं कब सो गया था।

दूसरे दिन चिकित्सालय में डाक्टर ने बच्चे को देखकर बताया– ''इसे लू लग गयी है। अभी एक दवा दे देता हूँ। कुछ दवाइयाँ और दे दूँगा। समय से खिलाना। कल तक यह ठीक हो जाएगा। परसो फिर इसे चेकअप कराने ले आना।'' अस्पताल से बाहर निकलते समय दादी और रामआसरे चाचा के चेहरे खिले हुए थे। वे नन्दू को खूब आशीर्वाद दे रहे थे।

प्रदीप कुमार शर्मा
जमशेदपुर (झारखंड)

साही : काँटों वाला जीव

साही जिसे कुछ लोग 'रोही' भी कहते हैं। अँग्रेजी में इसे पारक्यूपाइन कहा जाता है। सामान्यतः सभी देशों में पाया जाता है। कनाडा, अमेरिका और अफ्रीका में भी कुछ प्रजातियाँ मिलती है। बस, इतना जरूर है कि जलवायु, प्रकृति और मौसम के कारण विभिन्न जातियों के आकार प्रकार में भिन्नता रहती है।

'साही' ऐसे स्थानों पर बिल बनाकर रहता है, जहाँ इसे आसानी से मूंगफली, आलू, चुकंदर, गाजर, शलजम आदि खाने को मिल सके।

सामान्य तौर पर साही की लम्बाई पूँछ सहित 30 से 40 इंच तक होती है। इसका वजन 8 किलोग्राम से 10 किलोग्राम तक हो सकता है। इसकी पीठ और पूँछ पर ढेरों नुकीले काँटों पर काले रंग के गोल छल्ले रहते हैं। शत्रु को देखकर ये अपने नुकीले काँटे शत्रु के शरीर में चुभो देता है। कई बार शत्रु को भगाने या डराने के लिए पूरे शरीर को झकझोरता है जिससे शरीर के काँटे सीधे खड़े होकर आवाज करने लगते हैं। आवाज पैदाकर 'साही' अपने बड़े से बड़े शत्रु या बड़े जीव–जंतुओं तक को भयभीत कर देता है। इसकी इस तरह की आवाज से कभी–कभी शेर, चीते तक डर जाते हैं।

एक विशेष बात यह भी है कि साही के शरीर के काँटे साधारण काँटे नहीं होते बल्कि इन काँटों में जहर होता है। काँटे चुभते ही जहर का असर शत्रु पर दिखलायी देता है।

साही को जंगलों में रहना प्रिय है। जंगल में रहते हुए ये कंद–मूल, पेड़ों की छाल पते आदि खाकर पेट भरता है। सामान्य तौर पर अपनी ओर से कभी आक्रमण नहीं करता। जब तक कोई शत्रु इसके ऊपर आक्रमण नहीं करता।

डॉ. ऋषि मोहन श्रीवास्तव
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. महाश्वेता देवी के व्यक्तित्व का कौन सा गुण आपको प्रभावित करता है?
2. मैना गुनगुन गाते हुए क्या कह रही है ?
3. राष्ट्रीय बालिका दिवस कब मनाया जाता है?
4. सिनेस्थेसिया किसे कहते हैं ?
5. पिपलान्त्री गाँव की कौन सी विशेषता आपको अच्छी लगी ?
6. इस अंक की महाप्रज्ञ की कथा का क्या संदेश है ?
7. हमें कौन से घरेलू काम करने चाहिये ?
8. नाटिका में झूठ का ऑपरेशन कैसे किया गया ?
9. अगस्त्य ने क्या उपलब्धि प्राप्त की ?
10. डॉ. हरगोविन्द खुराना को किस क्षेत्र का नोबेल पुरस्कार मिला ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) भरतनाट्यम (ब) भांगड़ा (स) कथक (द) बिहू (2) द्रोपदी मुर्मू (3) चौबीस (4) बंकिमचन्द्र चटर्जी (5) हैदराबाद (6) पोर्ट ब्लेयर (7) 52 सैकंड (8) नेताजी सुभाषचन्द्र बोस (9) पं.जवाहर लाल नेहरू (10) अप्रेल 1973

अन्तर ढूँढ़िए

(1) पर्दे का रंग अलग (2) चम्मच का आकार बड़ा (3) घड़ी का एक काँटा गायब (4) दीवार पर लगी तस्वीर का रंग अलग (5) केक के ऊपर मोमबत्ती अतिरिक्त (6) दादी का नाक गायब (7) अलमारी के ऊपर मग अतिरिक्त (8) केले का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

1. बच्चों का देश 2. रुपया 3. स्वयंसेवक 4. उज्ज्वल 5. प्रस्तुतीकरण 6. सैनिकों 7. सामाजिक 8. चिह्न 9. दवाइयाँ 10. झोपड़ी 11. कुआँ 12. शुरू 13. शब्दकोश 14. छात्रवृत्ति 15. कवयित्री

बूझो तो जानें

(1) लोहड़ी, 13 जनवरी (2) महात्मा गांधी, 30 जनवरी, 1948 (3) 26 जनवरी, 1950 (4) स्वामी विवेकानन्द, 12 जनवरी (5) सावित्री बाई फुले।

वर्ग पहेली

1 प्र	2 का	3 श	न	■	4 सं	5 व	6 त
7 यो	ज	क	■	8 प्र	की	र्ण	न
9 ज	ल	■	■	10 चू	र्ण	■	ब
न	■	11 घे	12 व	र	■	13 म	द
■	14 व	रा	ह	■	15 आ	न	न
16 ज	न	■	17 म	18 हा	या	न	■
19 न	वा	20 सा	■	द	ति	■	21 धा
22 क	सी	दा	■	23 सा	त		रा

सुडोकू

4	3	9	2	6	8	7	1	5
6	7	8	4	5	1	2	3	9
1	5	2	9	3	7	8	4	6
7	9	4	3	1	2	6	5	8
8	1	5	6	4	9	3	7	2
3	2	6	8	7	5	1	9	4
5	8	3	7	9	6	4	2	1
2	4	1	5	8	3	9	6	7
9	6	7	1	2	4	5	8	3

अक्षय, कक्षा 8 , बीकानेर

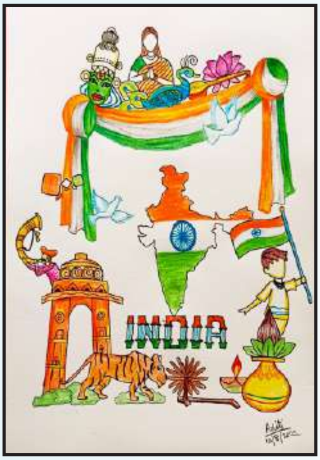

अदिति चोरड़िया, कक्षा 8, अहमदाबाद

कीर्ति गोयल, कक्षा 5, सिलीगुड़ी

प्रिशा चोरड़िया, कक्षा 8, थाने

कहानी

दोस्त तो दोस्त होता है

चंपक वन में नोनी शेरनी और चिंटू शेर रहते थे। जब कुछ दिनों बाद उनके बच्चा हुआ तो जंगल के सभी प्राणि उन्हें बधाई देने आए। उनमें से सबसे बुजुर्ग और समझदार पंछी भीष्म ने उसका नामकरण किया और उसका नाम रखा मंगल सिंह। एक छोटी चिड़िया उसके लिए पत्तों से खिलौना बनाकर लाई। जब मंगल थोड़ा बड़ा हो गया था और उसका चौथा जन्म दिन था। उसके दादा–दादी मामा मामी मौसा मौसी सब उसके घर पर उसका जन्मदिन बनाने आए थे। मंगल ने अपने शाकाहारी दोस्तों के लिए खास खीर बनवाई थी। पार्टी खत्म होने के बाद सबको उसने विदा किया और अपने से बड़ों का आशीष लिया।

अब सूरज ढलने ही वाला था कि वर्षा हो गई और उसने वर्षा में खूब मस्ती की। यही उसका सबसे अच्छा जन्मदिन रहा। अब मंगल स्कूल जाने लायक हो गया था तो उसके पिता ने उसका एडमिशन चंपक पब्लिक स्कूल में करवा दिया। वहाँ पर उसने अपने कुछ दोस्त बनाए जैसे खरगोश, हिरण आदि और जब उसके पिता को यह बात पता चली तो उसके पिता ने उसे समझाया कि हमें हिरण खरगोश इन सब को अपना दोस्त नहीं बनाना चाहिए। हमें सिर्फ शेर, भालू , हाथी जैसे ताकतवर जानवरों को अपना दोस्त बनाना चाहिए क्योंकि हम शेर हैं। अगर हम ऐसे छोटे–छोटे जानवरों से बातें करेंगे तो सबको लगेगा कि हम कायर हैं परन्तु मंगल ने अपने पिता की बात को नजरअंदाज कर दिया। एक दिन शेर खतरे में पड़ गया तो कोई उसकी जान बचाने नहीं आया परन्तु उसके दोस्त खरगोश, कछुआ और हिरण ही उसकी जान बचाने के लिए आए और जब उसने यह बात अपने पिता को जाकर बताई तो पिता समझ गये कि कोई दोस्त छोटा या बड़ा नहीं होता, दोस्त तो दोस्त होता है।

आराध्या माहेश्वरी, कक्षा–6, हापुड़

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल में मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

राष्ट्रीय युवा दिवस

"उठो, जागो और तब तक नहीं रुको, जब तक लक्ष्य न प्राप्त हो जाये ॥"
"जब तक जीवन है, सीखते रहो क्यूँकि अनुभव ही सबसे श्रेष्ठ शिक्षक है।"

– स्वामी विवेकानन्द

संतोष मीणा

संतोष

शोभा सुथार

पूजा जाट

तारा चौकीदार

जानकी

लीला, गीता

मधु कुमारी

मनीषा

कमला मीणा

सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल.
फाउंडेशन द्वारा गांवों में
संचालित सखियों की बाड़ी
केंद्र, ब्लॉक- छोटी सादड़ी,
लसाड़िया (उदयपुर),
रोहट (पाली)

मोनिका

नन्हा

अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

राजस्थानी दूध पीने में दुनिया में तीसरे स्थान पर

भारत दूध उत्पादन में दुनिया में नंबर वन है। 23 फीसदी वैश्विक योगदान करता है। उत्तर प्रदेश सबसे ज्यादा दूध उत्पादन करने वाला राज्य है। उससे 70 लाख टन कम दूध उत्पादन के साथ राजस्थान दूसरे स्थान पर है। दूध पीने के मामले में पंजाब के लोग दुनिया में सबसे आगे है। पंजाब में प्रति व्यक्ति रोज औसतन 1219 ग्राम दूध पीता है। देश में राजस्थान 1075 ग्राम के साथ दूसरे व (दुनिया में तीसरे) और हरियाणा 1063 ग्राम के साथ तीसरे स्थान पर है। पिछले दस साल में राजस्थानियों की दूध पीने की मात्रा दोगुने से भी ज्यादा बढ़ी है।

दुनिया भर में बढ़ा शाकाहार

एक नवीन शोध के अनुसार अमरीका में शाकाहार पसन्द करने वालों की संख्या में सबसे ज्यादा वृद्धि हुई है। यूरोपीय देशों में भी यह चलन बढ़ रहा है। जर्मनी में भी शाकाहार को प्राथमिकता दी जा रही है। वहीं भारत व चीन में गिरावट दर्ज की गई है। रिपोर्ट के अनुसार भले ही जीव रक्षा, प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित रखने जैसे कारणों से यह चलन बढ़ा है। इससे स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आएगी। यह भी ज्ञात हुआ है कि सेहतमंद रहने और वजन घटाने के उद्देश्य से लोग शाकाहार में दिलचस्पी लेने लगे हैं।

पहला स्किन डोनेशन

सवाई मानसिंह अस्पताल जयपुर में रक्तदान, अंगदान, नेत्रदान और देहदान के बाद अब त्वचा का दान भी शुरू हो गया है। वैशाली नगर जयपुर निवासी अनिता गोयल को कार्डियक अरेस्ट हुआ था। निजी अस्पताल में चिकित्सकों ने उसे ब्रेन डेड घोषित कर दिया। इसके बाद परिजनों ने त्वचा दान का निर्णय लिया। अनिता दुनिया से जाने के बाद चार लोगों को नई जिन्दगी दे गई।

गाँव की पंचायत करती है सारे फैसले

बिहार में जहानाबाद जिले में घोसी प्रखंड के धौताल बिगहा गाँव के लोग आपसी विवाद को लेकर आजादी के बाद किसी मामले में थाने तक नहीं पहुँचे। करीब 120 घरों और 800 की आबादी वाले इस गांव के लोगों ने कई और मिसाल कायम की हैं। यहाँ लोग एकता के सूत्र में इस तरह बंधे हैं कि पंचायत चुनाव में वार्ड और पंच का निर्विरोध निर्वाचन होता है। अगर गाँव में किसी बात को लेकर विवाद होता है तो उसे आपस में ही निपटा लिया जाता है।

अगस्त्य ने फिर रचा इतिहास

अगस्त्य जायसवाल ने एक बार फिर छोटी उम्र में बड़ा कारनामा कर दिखाया है। वे महज 16 साल की उम्र में पोस्ट ग्रेजुएट करने वाले भारत के पहले युवक बन गए है। वे सबसे कम उम्र में ग्रेजुएशन डिग्री भी हासिल कर चुके है। अगस्त्य ने मात्र 14 साल की उम्र में बीए मास कम्युनिकेशन एंड जर्नलिज्म में ग्रेजुएशन डिग्री हासिल की थी। उन्होंने सबसे कम उम्र 9 साल में तेलंगाना बोर्ड से 10वीं की परीक्षा पास की थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी अगस्त्य केवल 1.72 सेकंड में ए से जेड तक अक्षर टाइप कर सकते हैं। वे दोनों हाथों से लिख सकते हैं। अगस्त्य राष्ट्रीय स्तर के टेबल टेनिस खिलाड़ी व इंटरनेशनल मोटिवेशन स्पीकर भी है।

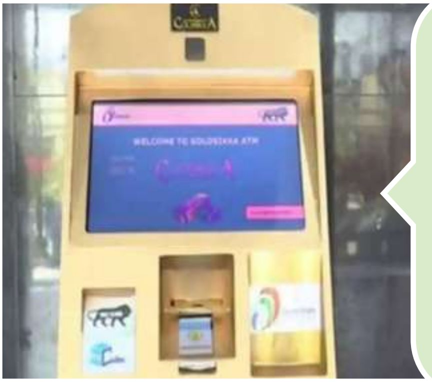

गोल्ड एटीएम देता है सोने के सिक्के

दुनिया का पहला रियल टाइम गोल्ड एटीएम हैदराबाद (भारत) में शुरू किया गया है। ओपनक्यूब टेक्नोलॉजीस स्टार्टअप ने इसे बेगमपेट इलाके में लगाया है। यह डेबिट या क्रेडिट कार्ड के जरिये 0.5 ग्राम से 100 ग्राम तक के सोने के सिक्के देता है। सोने की रियल टाइम कीमत स्क्रीन पर दिखती है।

MY DIARY

14 November 2022

Our school tooks us to a park and museum on children's day. In the park we played different outdoor games like badminton. We all students and teachers had lunch together. Then we went to the Ganga Goverment Museum. There we saw stuffed lion & tiger, different utensils, weapons and ornaments used by Royal families.

There was a statue of king Ganga Singh which appear to be living. There were sculptures of lord Mahavir and other so many. It was an educational trip filled with fun and enjoyment

Jayshankar
Class 5, Bikaner

Amazing Answers

Q.1 In which battle did Tipu Sultan Die ?

Ans. In his Last Battle.

Q.2 Where was the Declaration of Independence Signed ?

Ans. At the Bottom of the Page.

Q.3 Ganga Flows in which State ?.

Ans. Liquid State.

Q.4 When was Mahatma Gandhi Born ?.

Ans. On His Birthday.

Q.5 How will you Distribute 8 Mangoes among 6 People ?

Ans. By Preparing Mango Shake..!!

जन्मदिन की बधाई

3 जनवरी

धनिष्ठा बोहरा
उदयपुर

11 जनवरी

निखिता सिंह
मथुरा

19 जनवरी

हरमीत कौर
यमुनानगर (हरियाणा)

29 जनवरी

अर्शप्रीत
यमुनानगर (हरियाणा)

29 जनवरी

भूमि मेघवाल
निम्बाहेड़ा

29 जनवरी

छवि राठी
निम्बाहेड़ा

29 जनवरी

कियारा बोथरा
कोलकाता

30 जनवरी

महक प्रज्ञा बोथरा
नई दिल्ली

ऐसी जीत कायरता है

बच्चों की दो टोलियों में फुटबॉल का मैच था। बड़ी जोरदार गेंद खेली जा रही थी। सभी बच्चों की कोशिश थी कि अपनी तरफ गोल होने से बचो और दूसरी टोली की ओर गोल कर दो। गेंद के लिए तय था कि पैर से बढ़ाई जायेगी। गोल पर खड़े होने वाले के सिवा और किसी को हाथ से गेंद छूने की इजाजत न थी। यदि गलती से किसी और का हाथ गेंद से छू जाता तो फौरन दाँव ले लिया जाता। बड़ी देर तक खेल होता रहा। बराबर का जोड़ था।

न ये हारे, न वो। खिलाड़ियों में एक बच्चे का नाम था, रंजीत। वह बड़ी कुशलता से खेल रहा था। मैच की वजह से हर बच्चे में उत्साह था। मगर रंजीत सबसे ज्यादा उत्साहित था। वह पूरी कोशिश कर रहा था कि अपनी तरफ गोल न होने दे और दूसरी टोली हार जाए।

संयोग से एक बार गेंद बड़ी तेजी से रंजीत की टोली की ओर बढ़ी। वह दौड़कर रोक रहा था। गेंद गोल के नजदीक पहुँच गई थी। उसने हर तरह से गोल बचाने की कोशिश की– खूब करतब दिखाए। किन्तु अनजाने में गेंद उसके हाथ से छू गई।

सब बच्चे खेल में लगे थे। कुछ गोल करने की फिक्र में, कुछ गोल बचाने की चिन्ता में गेंद को हाथ लगते किसी ने नहीं देखा। गोल के पास दाँव मिलने का मतलब ये था कि गोल पक्का है। रंजीत को विचार आया कि यदि बताता हूँ तो गोल हो सकता है और हमारी टोली हार जाती है। न बताऊँ तो बेईमानी होगी।

आखिर हार–जीत की परवाह किये बिना वह चिल्ला पड़ा– "गेंद मेरे हाथ से छू गयी। आप लोग दाँव ले लो।" दूसरी टोली के बच्चों ने गोल के पास दाँव ले लिया। एक अच्छे खिलाड़ी ने ऐसा शॉट लगाया कि, गेंद सीधी गोल में गई और रोकने के प्रयास के बावजूद रंजीत की टोली हार गई।

खेल खत्म हुआ। रंजीत की टोली के बच्चों ने, उसको खरी–खोटी सुनानी शुरू कर दी। बोले– "तुमने बताया न होता तो आज हम न हारते। बताने की क्या जरूरत थी? कौन देखने गया था? उस दिन कबड्डी के मैच में भी तुमने झट कह दिया था, कि हाँ मेरे शरीर से उसका हाथ छू गया। हम लोग कहने गये थे कि नहीं छुआ है।"

रंजीत कहने लगा– "तुम लोग भी अजीब लड़के हो। तुम्हारा मतलब ये है कि जीतने के लिए मैं बेईमानी करता या झूठ बोलता। हार–जीत के लिए ये इतना बड़ा पाप, सरासर धोखेबाजी, मैं क्यों करने लगा।"

थोड़ी देर चुप रहकर उसने कहा– "जोश से खेलना और बात है। मैंने खेलने में तो लापरवाही नहीं बरती। बेईमानी करके जीतना बहादुरी नहीं, कायरता है–मित्रो।"

रंजीत की बात सुनकर सभी बच्चे शर्मिंदा हो गए और उसकी आलोचना करने की बजाय अब सब साथी उसकी प्रशंसा करने लगे।

सावित्री चौधरी
जयपुर (राजस्थान)

लोरी

चन्दन का झूला झुलाऊँ
मुनिया रानी को
गीत कोई नया सुनाऊँ
मुनिया रानी को।

फूलों की लड़ियाँ सजाऊँ
तेरे झूले में
रेशम के फुँदने लगाऊँ
तेरे झूले में।

बिंदी, काजल से सजाऊँ
मुनिया रानी को
कंगना–पायल पहनाऊँ
मुनिया रानी को।

बुरी नजर लगे ना तुझको
लगे न कोई डर
आ तुझे डिठौना लगाऊँ
गोरे गालों पर।

खूब सुनाएँ गीत सुहाने
सोजा लाडो रानी
कल फिर तुझको सुनाऊँगी
परियों की कहानी।

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'
भोपाल (मध्य प्रदेश)

बच्चों का देश पत्रिका

कितनी अच्छी बाल पत्रिका,
यह 'बच्चों का देश।'

आकर्षक मुख पृष्ठ देख सब,
पढ़ने को ललचाएँ।
रंग–बिरंगे चित्र मनोहर,
हमको बहुत लुभाएँ।

सम्पादक की पाती देती,
हितकारी संदेश।

चित्र पहेली, वर्ग पहेली,
और दिमागी कसरत।
देखें जब भी हल करने को
होती मन की हसरत।

नन्हा अखबार भी घुमाता,
हमको देश विदेश।

प्रेरक सभी कथा–कविताएँ
अज्ञान तिमिर हरती।
साहसी बच्चों की कहानी,
जोश नया नित भरती।

दादा–दादी पढ़ कर कहते,
यह पत्रिका विशेष।

उदय मेघवाल 'उदय'
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

पनडुब्बी चिड़िया

पनडुब्बी पक्षी को डबचिक भी कहा जाता है। इसकी पूरी दुनिया में 90 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। भारत में लाल कंठी और काली कंठी पनडुब्बी चिड़िया ज्यादा पाई जाती हैं। जहाँ पानी की अधिकता होती है उन्हीं तालाबों में यह पंछी रहता है। पानी कम होते या सूख जाने पर या पंछी उड़कर दूसरे पानी वाले तालाब में चला जाता है।

पनडुब्बी पक्षी एक ऐसा पक्षी है जो पानी की सतह पर और पानी के अन्दर समान गति से तैर लेता है। यह अपने बच्चों को पीठ पर बैठा कर पानी की सैर कराता है। इस चिड़िया के नर और मादा पक्षी एक ही तरह के दिखाई देते हैं और इनके दुम नहीं होती है। यह गोल मटोल छोटा सा 5 से 6 इंच लम्बा होता है। इसके पैरों के पंजे में झिल्लियाँ होती हैं जिससे पानी के अन्दर तैरने में सुविधा होती है। गर्दन के आसपास भूरा और बादामी रंग होता है। भारत में लाल कंठी और काली कंठी पनडुब्बियाँ भी पाई जाती हैं। एक की गर्दन लालिमा लिए हुए और एक की गर्दन काली होती है।

यह पक्षी भारत भर के जलाशयों के पानी में तैरता हुआ देखा जा सकता है। बतख की तरह इसके आहार में छोटी–छोटी मछलियाँ, घोंघे, पानी में रहने वाले छोटे–छोटे कीड़े और नर्म घास पत्तियाँ आदि होते हैं। इसे पानी में बड़ी तेजी से तैरते हुए और इधर–उधर पानी में चोंच मारते हुए देखा जा सकता है। खतरा पास आने पर पनडुब्बी पंछी बहुत तेजी से तैरते हुए तालाब के बीचों बीच चला जाता है या पानी के अन्दर डुबकी लगाकर तैरते हुए दूर निकल जाता है। इसकी चोंच छोटी नुकीली होती है।

इसके अंडे देने का समय जनवरी–फरवरी से मार्च–अप्रैल तक होता है। पानी में उभरे टापू या पानी के बीच की झाड़ियों में मादा घोंसला बनाकर 5 से 6 अंडे देती है। करीब 16 दिन बाद अंडे से बच्चे निकल जाते हैं। नर और मादा दोनों बच्चों को खाना देते हैं। छोटी–छोटी मछलियाँ कीड़े उनका मुख्य भोजन है। मादा पनडुब्बी अपने बच्चों को पीठ पर बैठाकर पानी की सैर कराती हैं। 1 या 2 चक्कर तालाब की लगाने के बाद मादा पनडुब्बी अपने बच्चों को पीठ से गिराती जाती है और इस तरह बच्चे पानी में तैरना और डुबकी लगाना सीख जाते हैं। कहते हैं पानी वाले जहाज की पनडुब्बी इसी पक्षी को देखकर वैज्ञानिकों ने बनाने की कल्पना की थी।

पनडुब्बी पंछी खतरा होने पर पानी के अन्दर डुबकी लगाकर तैरने लगते हैं। अगर पानी में ज्यादा खतरा हुआ तो यह पंछी तेजी से उड़कर पेड़ पर या ऊँची चट्टान पर बैठ जाते हैं। भारत में भी कुछ पनडुब्बी पंछी पानी के ऊपर दौड़ लगा लेते हैं। अमेरिका में पाया जाने वाला एक पनडुब्बी पंछी पानी के ऊपर दौड़ने के लिए मशहूर है। पनडुब्बी पंछी जल शुद्ध करता है, पानी में मिठास बढ़ाता है और प्रदूषण घटाता है। पर लोग पनडुब्बी को शिकार के लिए मारते हैं। हमारा दायित्व है कि पशु पक्षी और पर्यावरण की रक्षा करें। पंछी हमारे पर्यावरण के बहुत बड़े पोषक हैं।

शिवचरण चौहान
मनेथू कानपुर (उत्तर प्रदेश)

किड्स कॉर्नर

-Venu Variath

True or False

Put a tick ✓ mark on the correct answer.

Red, blue and yellow are primary colours.

true | false

Leaves of the trees are red.

true | false

Fish live in water.

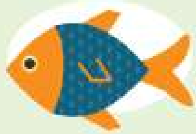

true | false

We need electricity to work a computer.

true | false

Picture Quiz

This is the picture of:

sugarcane | palm tree

This is the picture of:

rhinoceros | hippo

This is the picture of:

mosque | temple

This is the picture of:

watermelon | cucumber

Colour the helicopters as suggested

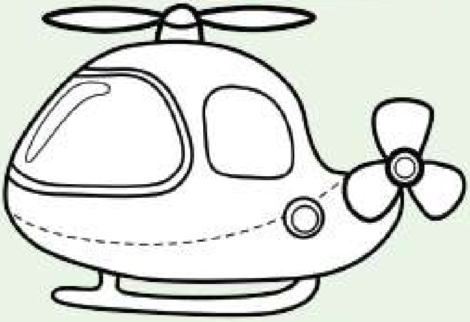

blue and brown

yellow and orange

बच्चों का देश द्वारा ऑनलाइन संचालित

बच्चों का क्लब

विधा : ड्राइंग

आप भी इस क्लब के सदस्य बनना चाहे तो 9414343100 पर अपना नाम, पता, उम्र, कक्षा, रुचि, पत्रिका का सदस्यता क्रमांक आदि विवरण लिखकर व्हाट्सएप मैसेज करें। इसकी सदस्यता नि:शुल्क है। सदस्यता के लिए आयु सीमा 7 से 15 वर्ष है।

गर्विश जैन, कक्षा 7, भीण्डर

यशस्वी, कक्षा 5, गौरीगंज

अनुष्का जैन, कक्षा 9, उदयपुर

अर्चिता तातेड़, कक्षा 7, कोलकाता

देवयानी जोशी, कक्षा 6, उदयपुर

ओजस्वी, कक्षा 5, गौरीगंज

पाखी जैन, कक्षा 5, उदयपुर

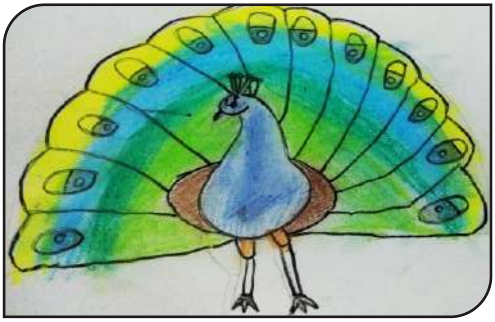

अर्पित शर्मा, कक्षा 6, चित्तौड़गढ़

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

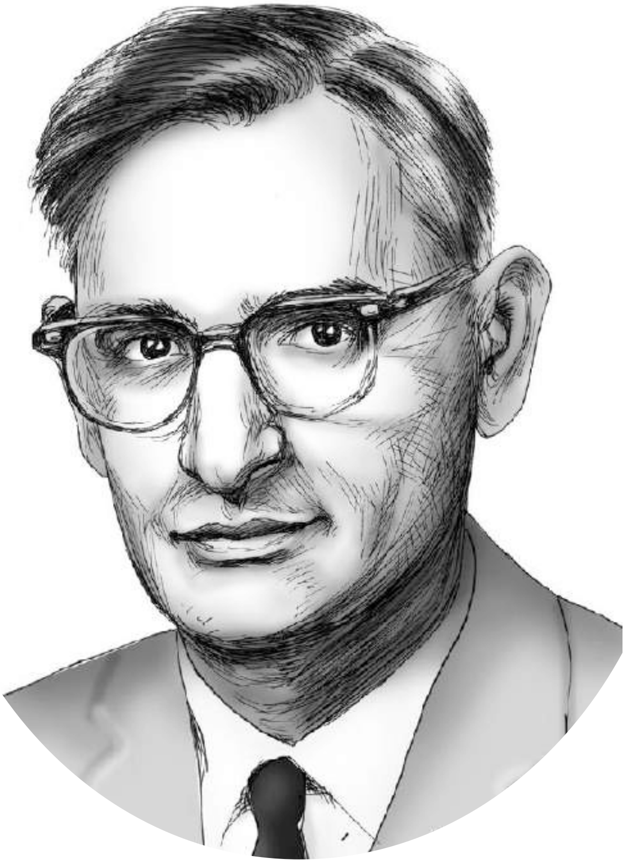

डॉ. हरगोविन्द खुराना

जन्म : 09 जनवरी, 1922 ■ निधन : 09 नवम्बर, 2011

अविभाजित भारतवर्ष के रायपुर जिला मुल्तान (पंजाब) कस्बे में जन्में डॉ हरगोविन्द खुराना भारतीय मूल के अमेरिकी जैव रसायन विज्ञानी थे। विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, अमरीका में अनुसन्धान करते हुए उन्हें 1968 में मार्शल डब्ल्यू निरेनबर्ग और रॉबर्ट डब्ल्यू होली के साथ मेडिसिन के लिए नोबेल पुरस्कार संयुक्त रूप से मिला। उन्होंने न्यूक्लिक एसिड में न्यूक्लियोटाइड का क्रम खोजा जिसमें कोशिका के अनुवांशिक कोड होते हैं। ये कोड कोशिका में प्रोटीन के संश्लेषण को नियंत्रित करते हैं। डॉ हरगोविन्द खुराना और निरेनबर्ग को उसी वर्ष कोलंबिया विश्वविद्यालय से लुइसा ग्रॉस हॉर्वित्ज पुरस्कार भी दिया गया था।